राष्ट्रीय दैनिक

# बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।



अपने नए म्यूजिक ...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

बुधवार, 29 मार्च 2023 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 10 अंकः 97 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त


## भाजपा कार्यालय के विस्तार का शिलान्यास

### पीएम मोदी बोलेः जनता को है हम पर संपूर्ण विश्वास

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज भाजपा मुख्यालय के नए आवासीय परिसर और सभागार का उद्घाटन किया। इसके साथ ही उन्होंने निर्माण का काम करने वाले लोगों से मुलाकात भी की। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, पूर्व केंद्रीय मंत्री मुरली मनोहर जोशी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और नितिन गडकरी भी मौजूद रहे। पीएम मोदी ने भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय के विस्तार की देशभर के भाजपा कार्यकर्ताओं को बहुत–बहुत बधाई दी और कहा कि 2018 में मैं कार्यालय का लोकार्पण करने आया

था, तो मैंने कहा था कि इस कार्यालय की आत्मा हमारा कार्यकर्ता है। उन्होंने कहा कि इस कार्यालय का विस्तार एक केवल भवन का विस्तार नहीं है, बल्कि ये प्रत्येक भाजपा कार्यकर्ता के सपनों का विस्तार है। मोदी ने कहा कि मैं पार्टी के कोटि–कोटि कार्यकर्ताओं के चरणों में प्रणाम करता हूं। मैं पार्टी के सभी संस्थापक सदस्यों का भी सिर झुकाकर नमन करता हूं। उन्होंने कहा कि आज हमारी पहचान दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक दल के तौर पर हो रही है। उन्होंने कहा कि बीजेपी की पहचान दुनिया में होने लगी है। भविष्य के आधुनिक और विकसित भारत का निर्माण हमारा लक्ष्य है। आज विश्व की पार्टियों से भाजपा के तुलना हो रही है। जिस दल ने हमें गढ़ा है, उसकी दुनिया में चर्चा होती है। इस दौरान प्रधानमंत्री ने साफ तौर पर कहा कि हमने संगठन को मजबूत किया है, तभी हम यहां पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि 2 लोकसभा सीटों से शुरू हुआ सफर 303 तक पहुंचा है। हम कठिन समय में हताश नहीं हुए बल्कि पार्टी के लिए काम करते रहे। इस दौरान उन्होंने 1984 की घटना का भी जिक्र किया।

## अतीक अहमद को सजा के बाद उमेश पाल का परिवार बोला, उसे फांसी होनी चाहिए, सीएम योगी पर है भरोसा

प्रयागराज। माफिया– राजनेता पूर्व सांसद अतीक अहमद और दो अन्य आरोपियों को उमेश पाल अपहरण मामले में प्रयागराज के एक स्थानीय अदालत ने उम्र कैद की सजा सुनाई है। इसको लेकर उमेश पाल के परिवार का बयान भी सामने आया है। उमेश पाल की मां शांति देवी ने कहा कि मेरे बेटे का अपहरण हुए 18 साल हो चुके हैं। वह एक लड़ाकू थे। मुझे कोर्ट पर भरोसा है। उन्होंने कहा कि उसे (अतीक अहमद को) मेरे बेटे के अपहरण के लिए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है लेकिन उसे मेरे बेटे की हत्या के लिए मौत की सजा दी जानी चाहिए। वह नोट के बल पर आगे कुछ भी कर सकता है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि अगर वह और उसका भाई बच गए तो यह हमारे और समाज के लिए समस्या होगी। प्रयागराज में एमपी–एमएलए कोर्ट में अतीक अहमद के वकील दया शंकर मिश्रा ने बताया कि आजीवन कारावास। उन्हें (उमेश पाल के परिवार को) एक–एक लाख रुपये का मुआवजा देने का भी निर्देश दिया गया है। यह पूछे जाने पर कि क्या वे उच्च न्यायालय में अपील करेंगे, ष्यह उच्च न्यायालय में किया जाएगा, यह कहीं और नहीं किया जा सकता है।ष प्रयागराज की एक विशेष अदालत ने पूर्व विधायक राजूपाल हत्याकांड मामले के प्रमुख गवाह रहे उमेश पाल के अपहरण के करीब 17 साल पुराने मामले में माफिया–राजनेता एवं पूर्व सांसद अतीक अहमद समेत तीन आरोपियों को मंगलवार को दोषी करार देते हुए सश्रम आजीवन कारावास की सजा सुनायी। जिला शासकीय अधिवक्ता गुलाब चंद्र अग्रहरि ने बताया कि प्रयागराज की सांसद–विधायक (एमपी–एमएलए) अदालत के न्यायाधीश दिनेश चंद्र शुक्ला ने वर्ष 2006 में हुए उमेश पाल अपहरण मामले में अतीक अहमद, उसके वकील सौलत हनीफ और पूर्व सभासद दिनेश पासी समेत तीन आरोपियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 364–ए के तहत दोषी करार देते हुए सश्रम आजीवन कारावास की सजा सुनायी।

मुझे यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ पर भरोसा है। उमेश पाल की पत्नी जया देवी ने कहा कि अभी के फैसले से हम संतुष्ट हैं। मेरे पति की हत्या के लिए अतीक अहमद को मौत की सजा दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि हम न्याय चाहते हैं और मैं यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ से हमारी मदद करने का अनुरोध करती हूं। उन्होंने साफ तौर

## भारत–अफ्रीका सेना प्रमुख सम्मेलन : रक्षा मंत्री बोले– हमारी साझेदारी मित्रता, सम्मान और पारस्परिक लाभ के सिद्धांतों पर आधारित

नई दिल्ली। भारत–अफ्रीका सेना प्रमुख सम्मेलन का आयोजन पुणे में हो रही है। इस बैठक को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने संबोधित किया। अपने संबोधन में राजनाथ ने कहा कि सहस्राब्दियों से भारत और अफ्रीका का समृद्ध इतिहास रहा है। संपूर्ण मानवता के दृष्टिकोण से भी अफ्रीका मानता है कि महाद्वीप, नस्ल या जातीयता की अपेक्षा के बिना अफ्रीका सभी मानवता का उद्गम स्थल है। उन्होंने कहा कि भारत एक युवा आबादी और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के साथ दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। उन्होंने कहा कि हमारे लोगों के लिए समृद्धि और गरिमापूर्ण जीवन हासिल करने की हमारी साझी खोज में भारत और अफ्रीका के बीच साझेदारी की स्वाभाविक भावना है। रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत अफ्रीका के विऔपनिवेशीकरण के सबसे मजबूत समर्थकों में से एक रहा है, और उसने अफ्रीका में साम्राज्यवादी, नस्लवादी और रंगभेद शासन के अंत के लिए काम किया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र के रूप में, हमारे मन में अपने अफ्रीकी

भाइयों और बहनों के लिए बहुत सम्मान और स्नेह है। उन्होंने कहा कि अफ्रीका आज एक अरब से अधिक जीवंत लोगों का घर है, जिनमें से दो तिहाई से अधिक 35 वर्ष से कम आयु के हैं। यदि इस मानव पूंजी को सही अवसरों के साथ समर्थन दिया जाता है, तो यह न केवल अफ्रीका के लिए विकास का इंजन बन जाएगा, बल्कि पूरी दुनिया के लिए भी। राजनाथ ने कहा कि नई और उभरती प्रौद्योगिकियां हमें इस तकनीकी अंतर को दूर करने का अवसर देती हैं। मैं दो ऐसी उभरती प्रौद्योगिकियों, डिजिटल प्रौद्योगिकियों और स्वच्छ और हरित प्रौद्योगिकियों का स्पष्ट रूप से उल्लेख करना चाहूंगा। हम इन दो क्षेत्रों में अपने विकास के अनुभवों को साझा करना चाहते हैं, ताकि हमारे अफ्रीकी साझेदार हमारी विशेषज्ञता से लाभान्वित हो सकें। एक विशेष उदाहरण भारत के न्च के नवाचार के माध्यम से डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से संपूर्ण नागरिक वर्ग का वित्तीय समावेशन है। उन्होंने कहा कि हमारे विचारों और प्रथाओं का आदान–प्रदान एकतरफा मामला नहीं होगा। हम अपने अफ्रीकी मित्रों के अनुभवों से भी सीखना चाहेंगे। राजनाथ ने यह भी कहा कि हमारा भारतीय रक्षा उद्योग आपकी रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आपके साथ काम कर सकता है। अपने अफ्रीकी मित्रों को उनकी रक्षा आवश्यकताओं को स्वदेशी रूप से पूरा करने के लिए सशक्त बनाने के उद्देश्य से, हम रक्षा निर्माण, अनुसंधान एवं विकास में अपनी विशेषज्ञता और ज्ञान को साझा करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं।

## पैन को आधार से जोड़ने की समयसीमा बढ़कर 30 जून हुई

नयी दिल्ली। सरकार ने स्थायी खाता संख्या

(पैन) को आधार से जोड़ने की समयसीमा तीन महीने बढ़ाकर 30 जून, 2023 कर दी है। एक आधिकारिक बयान में मंगलवार को यह जानकारी दी गई। इससे करदाताओं को इस प्रक्रिया के लिए कुछ और समय मिल सकेगा। पहले इसकी समयसीमा 31 मार्च थी। बयान में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति संबंधित प्राधिकरण को आधार–पैन को जोड़ने के लिए अपनी आधार संख्या की जानकारी दे सकेगा। आयकर अधिनियम, 1961 के तहत किसी भी व्यक्ति जिसे एक जुलाई, 2017 तक पैन आवंटित किया गया है और वह आधार नंबर पाने का पात्र है, उसे संबंधित प्राधिकरण को तय शुल्क के भुगतान के साथ 31 मार्च, 2023 तक अपने आधार नंबर की जानकारी देने की जरूरत होगी। ऐसा करने पर विफल होने पर एक अप्रैल, 2023 से उनपर जुर्माना लग सकता है। अब पैन को आधार से जोड़ने की समयसीमा को बढ़ाकर 30 जून, 2023 कर दिया गया है। एक जुलाई, 2023 से ऐसे करदाता जो अपने आधार की जानकारी देने में विफल रहे हैं उनका पैन निष्क्रिय हो जाएगा। अभी तक 51 करोड़ पैन को आधार से जोड़ा जा चुका है।

## कश्मीर घाटी में पश्मीना को बढ़ावा देने के साथ ही महिलाओं को बनाया जा रहा है आत्मनिर्भर

श्रीनगर। जम्मू–कश्मीर में हस्तशिल्प एवं हथकरघा विभाग पश्मीना को बढ़ावा देने के लिए लगातार अभियान चलाता रहता है। इसके तहत महिलाओं को प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है ताकि वह आत्मनिर्भर बन सकें। पूरे जम्मू–कश्मीर में हस्तशिल्प विभाग के कई प्रशिक्षण केंद्र हैं। ऐसा ही एक केंद्र श्रीनगर के अनहून मोहल्ला में भी स्थित है। इसमें श्रीनगर के विभिन्न हिस्सों से 30 महिलाएं पश्मीना ऊन कातने का प्रशिक्षण हासिल करने के लिए आती हैं। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को मासिक भत्ते के रूप में 1000 रुपए भी दिये जाते हैं। देखा जाये तो कश्मीरी पश्मीना पूरी दुनिया में मशहूर है और यह बिकता भी बहुत महँगा है लेकिन इसके प्रशिक्षित कारीगरों की बेहद कमी है। इसीलिए प्रशासन ऐसे केंद्रों की स्थापना और कार्यशालाओं के आयोजन से पश्मीना कारीगरी का प्रशिक्षण देता है। पश्मीना की पारम्परिक कताई के लिए भी प्रशिक्षण दिया जाता है साथ ही पश्मीना कारीगरों के लिए आधुनिक मशीनों को भी पेश किया गया है जिससे उन्हें लंबे समय तक एक ही अवस्था में बैठे–बैठे कार्य करने को मजबूर नहीं होना पड़े।

## बंगला छोड़ने के बाद कहां रहेंगे राहुल गांधी, खड़गे बोले– वह अपनी मां के साथ रहेंगे या मैं एक बंगला खाली कर दूंगा

नई दिल्ली। लोकसभा से राहुल गांधी को अयोग्य घोषित किए जाने के बाद उनके बंगले को खाली करने का भी उन्हें नोटिस दे दिया गया है। इसको लेकर भी राजनीति गर्म है। कांग्रेस का आरोप है कि राहुल गांधी के खिलाफ बदले की भावना से काम किया जा रहा है। दरअसल, सूरत कोर्ट की ओर से राहुल गांधी को एक मानहानि मामले में 2 साल की सजा सुनाई गई थी। इसी के बाद राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता रद्द कर दी गई। राहुल गांधी लोकसभा सदस्य नहीं रहे, ऐसे में उन्हें बंगला खाली करने का भी नोटिस दे दिया गया है। बड़ा सवाल यही है कि राहुल गांधी बंगला खाली करने के बाद कहां रहेंगे? गांधी फिलहाल 12 तुगलक मार्ग पर रहते हैं। इसको लेकर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे का भी बयान सामने आए हैं। मल्लिकार्जुन खड़गे ने भाजपा पर हमला करते हुए कहा कि वे उन्हें (राहुल गांधी) कमजोर करने की हर

संभव कोशिश करेंगे लेकिन अगर वह बंगला खाली करते हैं तो वह अपनी मां के साथ रहेंगे या वह मेरे पास आ सकते हैं और मैं एक बंगला खाली कर दूंगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मैं उन्हें डराने, धमकाने और अपमानित करने के सरकार के रवैये की निंदा करता हूं। यह तरीका नहीं है। कभी–कभी, हम 3–4 महीने बिना बंगले के रहते हैं। मुझे मेरा बंगला 6 महीने बाद मिला। लोग दूसरों को नीचा दिखाने के लिए ऐसा करते हैं। मैं ऐसे रवैये की निंदा करता हूं। बंगला खाली करने के मुद्दे पर राहुल गांधी ने लोकसभा सचिवालय को लिखे पत्र में कहा कि आपके पत्र में निहित विवरण का पालन करूंगा। लोकसभा की सदस्यता से अयोग्य घोषित कांग्रेस नेता राहुल गांधी को 22 अप्रैल तक उन्हें आवंटित सरकारी बंगला खाली करने को कहा गया है। ज्ञात हो कि आवास संबंधी संसद की समिति के अध्यक्ष भाजपा सांसद सी आर पाटिल हैं और इसमें विभिन्न दलों के 11 सदस्य हैं। समिति के सदस्य एवं कांग्रेस सदस्य मणिकम टैगोर ने इस फैसले को लेकर सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जब राहुल गांधी कुछ कॉरपोरेट घरानों को मिल रहे फायदे के बारे में बोलते हैं, तब उनकी सुरक्षा को एसपीजी से सीआरपीएफ को दे दी जाती है और अडाणी, मोदी मित्रता की बात करते हैं, तब उन्हें संसद की सदस्यता से अयोग्य ठहराया जाता है।

## दिल्ली उच्च न्यायालय ने मानहानि के मुकदमे में उद्धव और आदित्य ठाकरे को समन जारी किया

नयी दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय नेमहाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, उनके बेटे आदित्य ठाकरे और राज्यसभा सदस्य संजय राउत को सांसद राहुल रमेश शेवाले की ओर से दायर मानहानि के मुकदमे में मंगलवार को समन जारी किया।

राहुल रमेश शेवाले ने उनपर और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाने को लेकर उद्धव ठाकरे, आदित्य ठाकरे और संजय राउत के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया है। न्यायमूर्ति प्रतीक जालान ने मानहानि का मुकदमा विचारार्थ स्वीकार कर लिया और इस सिलसिले में उद्धव, आदित्य और राउत को समन जारी किया। इसके अलावा उच्च न्यायालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से कथित मानहानिकारक सामग्री को हटाने की मांग वाली याचिका पर गूगल, ट्विटर, उद्धव, आदित्य और राउत को 30 दिनों के भीतर अपने लिखित बयान दाखिल करने को कहा है। अदालत ने इस मामले की आगे की सुनवाई के लिए 17 अप्रैल की तारीख तय की है। सांसद राहुल रमेश शेवाले का प्रतिनिधित्व वरिष्ठ अधिवक्ता राजीव नायर और अरविंद वर्मा के अलावा चिराग शाह और उत्सव त्रिवेदी ने किया।

## राहुल गांधी की बढ़ सकती हैं मुश्किले, सावरकर के पोते बोले- माफी मांगें, नहीं तो कराएंगे FIR

नई दिल्ली। राहुल गांधी की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। एक ओर जहां मानहानि मामले में 2 साल की सजा मिलने के बाद उनके लोकसभा सदस्यता चली गई है। वहीं दूसरी ओर उनके बयान को लेकर सरगर्मियां जारी है। हाल में ही राहुल गांधी ने एक संवाददाता सम्मेलन के दौरान कहा था कि वह सावरकर नहीं हैं, राहुल गांधी है और गांधी कभी माफी नहीं मांगते। इसको लेकर अब सावरकर के पोते ने जबरदस्त तरीके से राहुल गांधी पर पलटवार किया है। सावरकर के पोते ने पहले तो चुनौती दी थी राहुल गांधी इस बात को साबित करें कि सावरकर ने माफी मांगी थी। अब सावरकर के पोते रंजीत सावरकर ने साफ तौर पर कहा है कि अगर राहुल गांधी अपने बयान को लेकर माफी नहीं मांगते हैं तो मैं उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराऊंगा। भाजपा भी पूरे मुद्दे को लेकर

राहुल गांधी पर हमलावर हैं। वीडी सावरकर के पोते रंजीत सावरकर साफ तौर पर कहा कि अगर राहुल गांधी सावरकर पर अपने बयान के लिए माफी नहीं मांगते हैं, तो मैं उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करूंगा। रंजीत सावरकर ने यह भी कहा कि संजय राउत और उद्धव ठाकरे के मन में सावरकर के प्रति सम्मान हो सकता है, लेकिन जब तक वे सावरकर के लिए अपना समर्थन नहीं दिखाते, इसका कोई मतलब नहीं है। अल्टीमेटम देने के बाद भी कांग्रेस नहीं रुकी और उन्होंने (उद्धव ठाकरे गुट) अभी तक कांग्रेस को अलग नहीं किया। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि शरद पवार जी के मन में सावरकर के लिए बहुत सम्मान है, लेकिन उन्हें आगे बढ़कर राहुल गांधी से सावरकर पर अब तक दिए गए अपने बयानों के लिए माफी मांगने के लिए कहना चाहिए।

सावरकर के पोते ने कहा कि राहुल गांधी द्वारा सावरकर का नाम राजनीति के लिए किस तरह से बदनाम किया जा रहा है यह देखकर वाकई दुख होता है। ऐसा लगता है कि वे मुसलमानों का भी ध्रुवीकरण कर रहे हैं। महाराष्ट्र में भी सावरकर के नाम पर राजनीति की जा रही है. मेरा अनुरोध है कि सावरकर के नाम का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए न करें। इससे पहले ऐसी टिप्पणियों को बचकानी बताते हुए सावरकर के पोते रंजीत सावरकर ने कहा था राहुल गांधी कह रहे हैं कि वह माफी नहीं मांगेंगे क्योंकि वह सावरकर नहीं हैं। मैं उन्हें चुनौती देता हूं कि वह सावरकर के माफी मांगने का कोई दस्तावेजी साक्ष्य दिखाएं।''

# एसएचओ से असंतुष्ट ग्राम प्रधानों ने वीडियो के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजा पत्र

दैनिक बुद्ध का सन्देश

इटियाथोक, गोण्डा। एसएचओ की कार्यशैली से असंतुष्ट ग्राम प्रधानों ने ब्लॉक मुख्यालय पहुंचकर प्रधान संघ अध्यक्ष ज्योति चंद्र तिवारी के अगुवाई में मुख्यमंत्री को संबोधित मांग पत्र बीडीओ रवि गुप्ता को सौंपकर एसएचओ के स्थानांतरण की मांग की है। इस दौरान लामबंद प्रधानों ने विरोध प्रदर्शन करते हुए नाराजगी जताई। ब्लॉक अध्यक्ष ने बताया कि एक दिन पूर्व मध्यनगर के ग्राम प्रधान सभाजीत सिंह के साथ प्रभारी निरीक्षक ने रुपये के लेनदेन को लेकर अभद्रता की थी, जिसको लेकर ब्लॉक सभागार में ग्राम प्रधानों की बैठक कर आगे की रणनीति बनाई गई है। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों के साथ एसएचओ के द्वारा की गई अभद्रता अत्यंत निंदनीय और अशोभनीय है, इसके लिए संगठन के लोग आर–पार की लड़ाई के लिए तैयार है। प्रदर्शन में मौजूद निसारुपुर के प्रधान प्रतिनिधि राजकिशोर सोनकर ने एसएचओ की कार्यशैली पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि गांव के लोग थाने पर जाते हैं तो अभिषेक सिंह काम भी नहीं सुनते हैं और जातिसूचक गाली देकर भगा देते हैं। ग्राम पंचायत जगतापुर के प्रधान प्रतिनिधि लालजी सोनकर ने कहा कि एसएचओ फरियादियों की समस्याओं का निस्तारण नहीं कराते है और गाली गलौज देकर भगा देते हैं। वही बिशुनपुर संगम के प्रधान प्रतिनिधि आनंद दुबे ने एसएचओ पर जातिवादिता फैलाने का आरोप लगाते हुए कहा कि लोगों की समस्या का निस्तारण नहीं करते हैं और फर्जी मुकदमे में फंसाने की धमकी भी देते हैं। मध्यनगर प्रधान सभाजीत सिंह ने आरोप लगाते हुए कहा कि अपने आवास की मरम्मत के लिए अभिषेक सिंह ने 25 हजार रुपये की मांग की थी जिस पर मेरे द्वारा 5 हजार रुपये दिया गया। सोमवार को एक काम से थाने पर हम गया तो थानाध्यक्ष समस्या सुनने के बजाय बकाया रकम मांगने लगे। जब हमने असमर्थता जताई तो मेरे साथ बदसलूकी की और थाने से भगा दिया। इस संबंध में मेरे द्वारा पुलिस अधीक्षक व अपर पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर एसएचओ के स्थानांतरण की मांग की गई है। साथ ही ब्लॉक मुख्यालय पर ग्राम प्रधानों के साथ बैठककर आगे की रणनीति बनाई गई है और सीएम को संबोधित ज्ञापन खंड विकास अधिकारी को सौंपा गया है। मौके पर ग्राम प्रधान पंकज सिंह, अशोक वर्मा, सोमेश्वर नाथ पांडे, ओमप्रकाश तिवारी, अवधेश तिवारी, सुरेंद्र तिवारी, विनोद कुमार मिश्रा, अंगद प्रसाद, सहित अन्य ग्राम प्रधान मौजूद रहे हैं।

## एक सप्ताह में सड़क पर मोटर साईकिल दुर्घटना में एक ही स्थान 2 की मौत

दैनिक बुद्ध का सन्देश

तुलसीपुर,बलरामपुर। गौरा मार्ग पर भूसेलवा के निकट मोटरसाईकिल दुर्घटनायो में 2मौत तथा कई घायल होने का समाचार प्राप्त हुवा है जानकारी के अनुसार ग्राम खजुरिया निवासी भूरे यादव 45की भूसेलवा के मोड़ पर तुलसीपुर आते समय सामने से मोटरसाईकिल टककर में गड्ढे में गिरजाने से घटना स्थल पर मौत हो गई थी और 27मार्च कोवहीं देवीपाटन से अपने गांव लौटते समय भूसेलवा के निकट गड्ढे में गिरजाने से मौत हो गई वहीं विकास यादव. समर चतुर्वेदी आशीष यादव की मेला देविपाटन से वापस लौटते समय गंभीर घायल हो गये!जिन्हे अस्पताल भेजा गया, गौरा थाना प्रभारी विनय यादव की देखरेख में जहाँ गयलो कोअस्पताल भेजा गया वहीं दुर्घटना स्थल पर गड्ढे कोजे. वी. सी पटवा कर लोगों की जान बचाने का सराहनीय कार्य किया गया।

## ज्वाला महारानी मंदिर कई दशकों से स्थानीय लोगों की आस्था का केंद्र बना हुआ है

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उतरौला/बलरामपुर। नगर क्षेत्र के हृदय स्थल में स्थित ज्वाला महारानी मंदिर कई दशकों से स्थानीय लोगों की आस्था का केंद्र बना हुआ है। वर्ष के बारहों महीने सोमवार व शुक्रवार को मनोकामनाएं पूरी होने पर लोग कड़ाह प्रसाद का आयोजन करते हैं। शारदीय व वासंतिक नवरात्र में यहां नारियल–चुनरी चढ़ाने के साथ पूजन–अर्चन का क्रम चलता रहता है। राजस्थानी शैली में निर्मित सुनहरे रंग का मंदिर आकर्षक है।

**व्यवस्थाएं-**

मंदिर पर श्रद्धालुओं के लिए पेयजल व दर्शन की पूरी व्यवस्था है। नारियल–चुनरी या अन्य चढ़ावे के सामानों की दूकानें पास में ही स्थित है। महिला–पुरुषों के कतार के लिए अलग–अलग व्यवस्था है।

**अमर चंद्र गुप्ता**

**व्यवस्थापक**

स्थानीय व आसपास के लोगो की मां ज्वाला महारानी में विशेष आस्था है मां ज्वाला देवी सभी भक्तों के कष्टों को दूर करती है मन्दिर परिसर में हर श्रद्धालु की आस्था का पूरा ध्यान रखा जाता है

**शुभम् कसौधन ।**

### यह है इतिहास

भगवान शिव का अपने पिता द्वारा अपमान किए जाने से आहत देवी सती ने यज्ञ कुंड में कूद कर अपनी जान दे दी थी। व्यथित होकर भगवान शिव ने देवी का शव कुंड से उठाकर तीनों लोकों में तांडव नृत्य शुरू कर दिया था। तांडव नृत्य से सृष्टि के विनाश की आशंका के भगवान विष्णु ने सती मोह समाप्त करने के लिए अपने चक्र से देवी सती के शरीर का छेदन करना शुरू कर दिया। मान्यता है कि सती के अंगों से निकली ज्वाला इसी स्थान पर गिर कर पाताल लोक चली गई। यहां गहराई में एक गड्ढा बन गया। पहले लोग इसी गड्ढे पर नारियल–चुनरी, दीप चढ़ाते थे। अब गड्ढे पर चबूतरा बना कर इसे ढक दिया गया है। मंदिर के भीतर देवी की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के पुजारी पंडित चतुरेश शास्त्री बताते हैं कि देवी जी के ज्वाला रूपी स्वरूप की पूजा इस स्थान पर वर्षों से चली आ रही है। आदि शक्ति श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी करती हैं। यही कारण है कि यहां पूरे साल लोग दर्शन करने व देवी का आशीर्वाद पाने के लिए अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं।

# गोपाल वेलफेयर सोसायटी (रजि.) हाथरस द्वारा निशुल्क डांस प्रतियोगिता कराई गई

दैनिक बुद्ध का सन्देश

मोतीगंज गोंडा। हाथरस उत्तर प्रदेश गोपाल वेलफेयर सोसायटी द्वारा आज नचले डांस प्रतियोगिता का अयोजन कराया गया, जिसमे मुख्य अथिति में मुख्य विकास अधिकारी (साहित्य प्रकाश मिश्रा जी) गोपाल वेलफेयर सोसायटी के संस्थापकध्अध्यक्ष , पण्डित गोपाल शर्मा जी युवा वरिष्ठ समाज सेवी ने दी पीताम्बर वस्त्र पहनाकर व सोसायटी का प्रतीत चिन्ह भेंट देकर गया सम्मानित किया। डांस प्रतियोगिता दो केटेगिरी जूनियर व सीनियार वर्ग में सम्पन्न कराई गई, निर्णायक भूमिका में अलीगढ़ से पधारी शशि ठाकुर ने जजमेंट किया सीनियर वर्ग में प्रथम, अनम, द्वितीय ज्योति वर्मा, तृतीय स्थान पर अनन्या, इसी क्रम जूनियर में प्रथम स्थान पर पूनम , द्वितीय स्थान पर मुस्कान, तृतीय स्थान पर लवि वार्ष्णेय रही। इन सभी बच्चों को गोपाल वेलफेयर सोसायटी के संस्थापकध्अध्यक्ष पण्डित गोपाल शर्मा जी युवा वरिष्ठ समाज सेवी व मुख्य अतिथि के हाथों से सील्ड भेंट देकर सम्मानित किया गया। संचालन करता में डा. उपेंद्र झा एवं ऐडवोकेट चक्रवती गोयल जी ने किया, डा. उपेंद्र झा जी ने अपनी कविताओं से सभी का दिल जीता। और सोसाइटी के कार्यों का वर्ण किया और सोसाइटी के संस्थापक अध्यक्ष पण्डित गोपाल शर्मा जी युवा वरिष्ठ समाज सेवी की प्रशंसा में दो शब्द कहे इंसानियत इंसान को इंसान बना देती है लग्न हर मुश्किल को आसान बना देती है लोग ऐसे ही नहीं जाते मन्दिर आस्था ही है जो पत्थर को भगवान बना देती है। ऐसे हैं हमारे भाई पण्डित गोपाल शर्मा जी ये समाज के लिए कुछ न कुछ करते रहते हैं बहुत ही नेक और अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता हैं। यह प्रतियोगिता हाथरस में चल रहे हाथरस महोत्सव पी सी बागला कॉलेज के मैदान अलीगढ़ रोड़ हाथरस पर संपन्न कराई गई, सोसायटी के संस्थापकध्अध्यक्ष पण्डित गोपाल जी युवा वरिष्ठ समाज सेवी ने कहा समय समय पर प्रतियोगिता कराते रहना चाहिए जिससे बच्चों में शारीरिक विकास हों सकें और प्रतिभायो को अपनी कला दिखाने का मौका मिल सके स इस मौके पर सोसाइटी के पदाधिकारी, प. गिरधारी मिश्र, नीलम बंसल, बेबी यादौन आदि उपस्थित रहे।

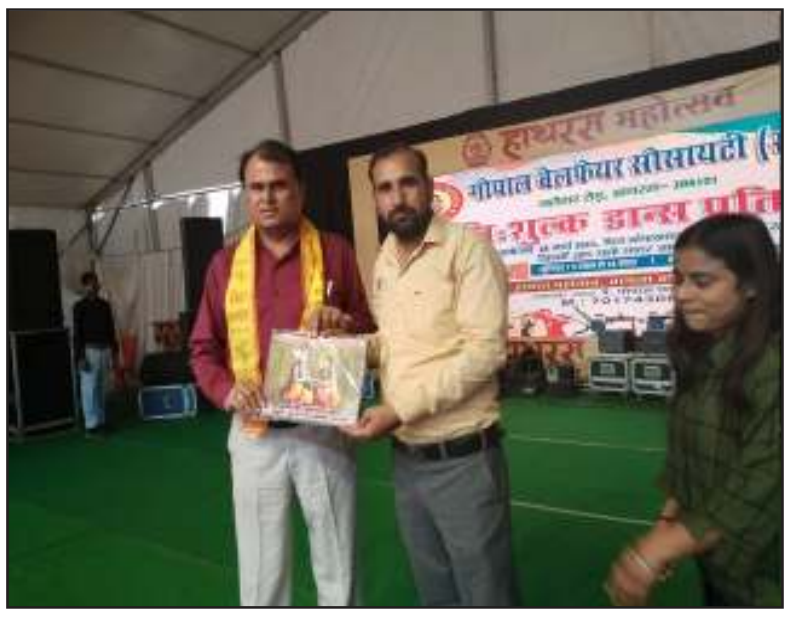

## पोषण पखवाड़ा के तहत गोद भराई की रस्म का हुआ आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बलरामपुर,तुलसीपुर। 20 मार्च से 03 अप्रैल तक चलने वाले पोषण पखवाड़ा के तहत बलरामपुर नगर में गर्भवती महिलाओ की गोद भराई की रस्म एवं धात्री महिलाओ का अन्नप्राशन किया गया। इस अवसर पर डीपीओ निहारिका विश्वकर्मा द्वारा पोषण द्वारा हरी साग–सब्जी के नियमित प्रयोग और इससे होने वाले फायदे के बारे में बताया गया। स्वच्छता एवं साफ–सफाई को लेकर भी चर्चा हुई। जिला कार्यक्रम अधिकारी ने बताया की पोषण पाखवाड़ा के अंतर्गत पूरे जनपद मे अनेक तरह के पोषण कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है जिससे जनपद को कुपोषण मुक्त किया जा सके। इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी सागर सिंह,खंड शिक्षा अधिकारी बलरामपुर,सीडीपीओ बलरामपुर व अन्य संबंधित अधिकारी,आंगनबाड़ी कार्यकत्री उपस्थित रहें।

## मुख्यमंत्री की पहल पर राजकीय महाविद्यालय पचवस का होगा विस्तार

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बस्ती।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दुबौलिया में ए.डी. एकेडमी के उद्घाटन के दौरान इन्द्रासन सिंह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय महाविद्यालय पचवस के विकास पर भी विचार व्यक्त किया। कहा कि वे चाहते हैं कि इस महाविद्यालय को विस्तार मिले, नये विषयों पर भी पढाई की सुविधा हो। भारतीय जनता पार्टी के जिला मंत्री अखण्ड सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री ने जिलाधिकारी बस्ती को निर्देश भी दिया है।भाजपा नेता अखण्ड सिंह ने बताया कि इन्द्रासन सिंह स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय महाविद्यालय पचवस में वाणिज्य संकाय, विज्ञान संकाय और स्नातकोत्तर कक्षाओं हेतु भवन निर्माण, जिम्नेजियम और बहु उद्देशीय हाल के निर्माण हेतु परियोजना प्रबन्धक राजकीय निर्माण निगम को आगणन का प्रस्ताव उपलब्ध कराने हेतु निर्देशित किया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जिलाधिकारी को निर्देश दिया है कि इसे प्राथमिकता से पूरा कराया जाय। अखण्ड सिंह ने बताया कि गोरखपुर–लखनऊ मार्ग पर हाइवे के निकट स्थित पचवस महाविद्यालय के विस्तारीकरण से छात्रों को पठन–पाठन में विशेष सुविधा होगी। मुख्यमंत्री के आश्वासन से क्षेत्र में प्रसन्नता की लहर है।

## माँ पाटेश्वरी राजकीय विश्वविद्यालय बलरामपुर जनपद में बनाये जाने की मांग की

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उतरौला,बलरामपुर। माँ पाटेश्वरी राजकीय विश्वविद्यालय बलरामपुर जनपद में बनाये जाने की मांग को लेकर समाजवादी पार्टी कार्यकर्ताओं ने सपा वरिष्ठ नेता डॉ एहसान खान व राम दयाल यादव के नेतृत्व में प्रदर्शन कर एक ज्ञापन तहसीलदार अवधेश कुमार को सौंपा। ज्ञापन में मुख्यमंत्री से बलरामपुर जनपद में विश्वविद्यालय के स्थापना की मांग की गई।ज्ञापन में कहा जहै कि बलरामपुर जनपद के साथ हमेशा से अन्याय किया जा रहा है,प्रस्तावित विश्वविद्यालय परसपुर में किया जा रहा है जो मुख्यालय से 125 किमी की दूर है।जनपद में विश्वविद्यालय की स्थापना से साक्षरता में सुधार होगा व उच्च शिक्षा के लिये मण्डल वासियों को आसानी होगी। इस अवसर पर सपा युवा नेता एजाज मलिक, इजहार खां पप्पू, नूरूल्लाह खां मुन्ना, सपा विधान सभा अध्यक्ष महेश यादव,अंसार अहमद, नसीम अहमद, पवन यादव, वसी अहमद मनोज यादव व इजहारुल हसन सहित अन्य लोग मौजूद रहे। उतरौला वासियो ने भी विश्वविद्यालय की स्थापना के समर्थन हस्ताक्षर अभियान की भी शुरुआत की है।

## खाकी में भी धड़का दिल मित्र पुलिस की भूमिका में दिखी पीआरबी टीम,हो रही प्रशंसा

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गोण्डा। कटरा बाजार की पी आर वी टीम मंगलवार को मानवीय संवेदना का उदाहरण पेश करते हुए पूरी तरह से मित्र पुलिस की भूमिका में दिखी। दी गई जानकारी के मुताबिक मंगलवार को 08रू01 बजे इवेंट संख्या च् 28032301976 से सूचना प्राप्त हुई जिसमें दीनानाथ निवासी गडरिया पुरवा चंदवतपुर थाना कोतवाली देहात जनपद गोण्डा द्वारा बताया गया कि बच्चे का एक्सीडेंट हो गया है स प्राप्त सूचना पर यूपी 112 थाना कटरा बाजार मे पीआरबी संख्या 0863 पर नियुक्त पीआरबी कमांडर आरक्षी रामबहादुर व होमगार्ड चालक सुनील कुमार चौबे तत्काल मौके पर पहुंचे तो देखा कि एक लड़का नाम सूरज कुमार पुत्र दीनानाथ उम्र 14 वर्ष का बाइक से एक्सीडेंट में घायल पड़ा था, लड़के के गंभीर रूप से घायल होने के कारण पीआरबी कर्मियों द्वारा इलाज हेतु जिला अस्पताल भेजवाकर भर्ती कराया गया । पीआरबी कर्मियों के कार्य की चारों तरफ सराहना की जा रही है।

## डीएम ने किया नगर पालिका के कूड़ा डंपिंग स्थल का निरीक्षण

### साफ सफाई की बेहतर व्यवस्था का दिया निर्देश

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बलरामपुर। डीएम डॉ महेंद्र कुमार द्वारा नगर पालिका बलरामपुर में साफ सफाई की व्यवस्था का जायजा लिया गया। उन्होंने शहर के मध्य में कही भी कूड़ा डंपिंग स्थल नही दिखाई पड़ने का निर्देश दिया। इसके लिए उन्होंने शहर के किनारे कूड़ा डंपिंग स्थल का निरीक्षण किया,उन्होंने कहा की कूड़े का निस्तारण नियमानुसार किया जाए। उन्होंने प्रशासक एसडीएम सदर को निर्देश दिया की नगर पालिका में साफ सफाई की बेहतर व्यवस्था हो, शहर में कही भी कूड़ा न दिखे, कार्य में लापरवाही बरतने वाले सफाईकर्मी, सफाई नायक के विरुद्ध निलंबन की कार्यवाही करे। सूचना विभाग बलरामपुर द्वारा जारी।

# बिजली कर्मियों का उत्पीड़न नहीं बर्दाश्त करेगा कर्मचारी संघ:अनिल सिंह

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। मंगलवार को संयुक्त राज्य परिषद कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष अनिल सिंह के नेतृत्व में बिजली कर्मियों के ऊपर हो रहे उत्पीड़न को लेकर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा गया। जिला अध्यक्ष अनिल सिंह ने कहा कि राज्य सरकार के सभी सरकारी विभागों के कर्मचारी,अधिकारी और शिक्षकों के साथ आज हम सब मिलकर प्रदर्शन कर कर्मचारियों के साथ किए जा रहे उत्पीड़न के विरोधा में ज्ञापन दियय गया है जिला अध्यक्ष अनिल सिंह ने कहा कि 3 दिसंबर 2022 को किए गए समझौते को लागू न किए जाने पर गंभीर दिक्कतें हो सकती हैं जिलाध्यक्ष अनिल सिंह ने माननीय ऊर्जा मंत्री अरविंद कुमार शर्मा द्वारा किए जा रहे दंडात्मक कार्रवाई वापस लेने व समझौता साहित अन्य मांगों पर विचार करने के लिए आग्रह किया है जिलाध्यक्ष अनिल सिंह ने कहा कि यदि समझौता नहीं लागू किया गया और बिजली कर्मचारियों के ऊपर से दंडात्मक कार्यवाही नहीं खत्म किया गया तो प्रदेश के 18 लाख कर्मचारी व अधिकारी आगे आकर धरना प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे जिसका सीधा उत्तरदायित्व उत्तर प्रदेश सरकार का होगा। संयुक्त राज्य कर्मचारी संघ के द्वारा दिए गए इस धरना प्रदर्शन में ज्ञापन देने वाले कर्मचारियों में मुनीर कुमार डिप्लोमा इंजीनियरिंगमहासंघ, अनिल सिंह जिलाध्यक्ष राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद सिद्धार्थनगर ,अजय गुप्ता जिलाध्यक्ष लेखपाल संघ सिद्धार्थनगर, शैलेंद्र गुप्ता जिला मंत्री उत्तर प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ परिषद सिद्धार्थनगर ,राजेश श्रीवास्तव जिला अध्यक्ष उत्तर प्रदेश सिंचाई संघ, वीरेंद्र नाथ त्रिपाठी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश फार्मासिस्ट संघ, सुधीर श्रीवास्तव तहसील अध्यक्ष लेखपाल संघ ,विनोद कुमार गौतम तहसील अध्यक्ष लेखपाल संघ ,भानु प्रताप तहसील मंत्री बांसी लेखपाल संघ ,राजेश कुमार जिला कोषाध्यक्ष लेखपाल संघ ,नंदकिशोर जिला मंत्री चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ, प्रभात सैनी ,विपुल त्रिपाठी ,अभिजीत सिंह, अमित चौधरी ,संजय कुमार ,अवधेश यादव ,अमरजीत चौधरी ,नवीन चौधरी ,अजय पांडे ,सुनील त्रिपाठी सहित सैकड़ों की संख्या में कर्मचारी इस धरना प्रदर्शन में शामिल रहे।

### कर्मचारी समाज की मुख्यधारा: जिलाध्यक्ष अनिल सिंह

मीडिया से बात करते हुए राज्य कर्मचारी सयुक्त परिषद सिद्धार्थनगर के जिलाध्यक्ष अनिल सिंह ने कहा कि हम मुख्यमंत्री से मांग करते हैं कि विद्युत कर्मचारियों की समस्याओं का उदारता पूर्वक निस्तारित करते हुए उनके पदाधिकारियों एंव कर्मचारियों के निलंबन और बर्खास्त को समाप्त करने का आदेश देने की कृपया करें क्योंकि कर्मचारी समाज की मुख्यधारा में है और हम सब के परिवार और सदस्य के रूप में जुड़े हुए हैं हम सब कर्मचारी आपके साथ सदा खड़ा रहते हैं और रहेंगे इस अवसर पर ज्ञापन को न्यायिक मजिस्ट्रेट नौगढ़ को दिया गया।

## छुट्टा पशुओं को गौशालाओ में कराया गया बंद

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका बाजार सिद्धार्थनगर। छुट्टा पशुओं से परेशान किसान

को अब राहत मिल गई है उसका बाजार के कस्बे में छुट्टा पशुओं से लोगो को काफी समस्यायों को सामना करना पड़ता है मंगलवार को एक विशेष अभियान चलाया गया जिसमे जितने छुट्टा पशु है उसे अभियान के माध्यम से पकड़वाकर गौशाला में कराया गया है ।छुट्टा पशु से किसान से लेकर राहगीर तक परेशान थे । छुट्टा पशु के चपेट में आने से लोग चोटिल भी हो जा रहे थे नगर पंचायत उसका बाजार के कर्मचारी लगकर दर्जनों छुट्टा पशु को गौशाला मे ले जाया गया । ईओ विंध्याचल ने बताया कि जिलाधिकारी के निर्देशानुसार विशेष अभियान चलाकर छुट्टा पशुओं को परसा स्थित गौशाला में शिफ्ट कराया गया है और जो भी बचे छुट्टा पशु है उनको भी पकड़वाकर गौशाला में ले जाया जाएगा।

## सफाई कर्मी के साथ विशेष संचारी रोग का किया गया बैठक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका बाजार सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत उसका बाजार के

मीटिंग हाल में मंगलवार को विशेष संचारी रोग का सफाई कर्मचारियों के साथ अधीक्षक एसके पटेल की अध्यक्षता में बैठक की गई ।अधीक्षक एसके पटेल ने बताया कि जेई के टीके 2 साल तक के बच्चो को नियमित टीकाकरण सत्र में लगवाए, घरों के आस पास साफ सफाई रखे,पूरी बाह वाली कमीज पैंट और मोजे पहने,स्वच्छ पेयजल ही पिए,,आस पास जल जमाव न होने दे, कुपोषित बच्चो के प्रति विशेष ध्यान रखे,खुले में शौच न करे साबुन से हाथ धोने की आदत डाले ,रोजाना स्नान करे ,शिक्षक विद्यार्थियों की साफ सफाई पर ध्यान दे आदि को लेकर ध्यान देना है और ज्यादा से ज्यादा लोगो को जागरूक भी किया जाय। बैठक में उपस्थित बीसीपीएम कृष्ण मोहन,रमेश कुमार,अमित वर्मा,मनीष पांडेय,रोहित कुमार, पवन कुमार, जमील , अनील श्रीवास्तव ,मोहित आदि लोग रहे मौजूद।

## 16 अप्रैल को जिला मुख्यालय पर पेंशन संवैधानिक मार्च का होगा आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

डुमरियागंज, सिद्धार्थनगर। डुमरियागंज स्थित ब्लॉक संसाधन

केंद्र के परिसर में अटेवा के तत्वधान में मंगलवार को दिन में 3 बजे एक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें शिक्षक शिक्षिकाओं ने भाग लिया। इस बैठक में आगामी 1 अप्रैल को काला दिवस मनाने व 16 अप्रैल को जिला मुख्यालय पर पेंशन संवैधानिक मार्च निकाले जाने पर चर्चा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए अटेवा के प्रदेश संयुक्त मंत्री जनार्दन शुक्ला ने कहा कि आगामी 1 अप्रैल को सभी शिक्षक शिक्षिकाएं अपने विद्यालय पर हाथ मे कालापट्टी बांधकर कार्य करेंगे। इस विरोध दिवस पर अन्य विभागों के सभी पेंशन विहीन कर्मचारियों की सहभागिता भी होनी है। उन्होंने यह भी कहा कि 16 अप्रैल को प्रत्येक जिला मुख्यालय पर पेंशन संवैधानिक मार्च भी निकाला जाएगा जिसकी रणनीति बनाई जा रही है। बैठक को विवेक द्विवेदी ,राममिलन गौतम, राकेश वर्मा, अखिलेश चौधरी, विष्णु कांत दुबे आदि ने भी संबोधित किया। इस मौके पर प्रेमचंद, पवन कुमार, दिग्विजय राय, रामनाथ, भैया राम ,राजेश कुमार, रवि, राजेश, प्रदीप कुमार ,अंजू देवी, मीनाक्षी, पूजा लक्ष्मी, अखिलेश कुमार गौतम आदि लोग मौजूद रहे।

## प्रशिक्षुओं को डीआईजी के हाथों मिला प्रमाण पत्र

- **एसएसबी द्वारा हाउस वायरिंग एव शैक्षिक भ्रमण पर गए युवको को डीआईजी ने किया प्रोत्साहित**
- **सीमा सुरक्षा के साथ साथ रोजगार परक प्रशिक्षण भी युवको युवतियों को दिलाती है एसएसबी - आर के डोगरा**

दैनिक बुद्ध का सन्देश

कपिलवस्तु,सिद्धार्थनगर। सशस्त्र सीमा बल 43वी वाहिनी द्वारा आयोजित नागरिक गतिविधि कार्यक्रम के तहत एसबीआई आरसेटी द्वारा बीओपी अलीगढ़वा में हाउस वायरिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किये प्रशिक्षुओं एव शैक्षिक भ्रमण पर गए सीमा क्षेत्र के विद्यार्थियों को मंगलवार को एसएसबी के उप महानिरीक्षक राजीव राणा द्वारा प्रमाण पत्र एवं टूल किट तथा सीवल घड़ी देकर पुरस्कृत किया गया। उप महानिरीक्षक के हाथों प्रमाण पत्र पाकर प्रशिक्षुओ का चेहरा खिल गया। इस अवसर पर उप महानिरीक्षक राजीव राणा ने कहा कि एसएसबी भारत नेपाल सीमा पर सुरक्षा के साथ साथ नागरिक गतिविधि कार्यक्रम के माध्यम से बेरोजगार युवकों एवं युवतियों को समय समय से रोजगार परक प्रशिक्षण दिलवाकर उन्हें आत्म निर्भर भी बनाने का कार्य करती है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए 43वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल के द्वितीय कमान अधिकारी आर के डोगरा ने कहा कि नौजवान बेरोजगार युवकों युवतियों को रोजगार परक बनाने में एसएसबी अपनी अहम भूमिका निभा रही है। उन्होंने कहा कि एसरसबी टेलरिंग, हाउस वायरिंग, भारत भ्रमण, नशा मुक्ति भारत अभियान, स्वच्छता अभियान, तिरंगा यात्रा के माध्यम से नागरिको को जोड़ने का कार्य करती है तथा उन्हें सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती रहती है। कार्यक्रम का संचालन महिला आरक्षी कोमल यादव तथा आभार प्रकट उप कमाण्डेन्ट यशवंत कुमार ने किया। इस अवसर पर एसबीआई आरसेटी के निदेशज मृत्युंजय शर्मा, एआरटीओ अरुण प्रकाश चौबे, सेवा निवृत्त शिक्षक सन्तराम चौधरी, ग्राम प्रधान इं. प्रदीप चौधरी, सहायक कमांडेंट राजपाल, जशवंत कुमार, निरीक्षक उमेश सिंह, उपनिरीक्षक धर्मेंद कुमार, आर्यन गुप्त, आरसेटी के ट्रेनर शिव शंकर, एमएसएस के जय प्रकाश गुप्ता, बृज लाल यादव, अखिलेश कुमार, प्लान इंडिया के प्रसून शुक्ला सहित सभी प्रशिक्षु एव एसएसबी महिला पुरूष जनाव उपस्थित रहे।

## पिकप की ठोकर से साइकिल सवार चोटिल

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका बाजार सिद्धार्थनगर। कस्बा के अमृत लाल महा

विद्यालय के पास मंगलवार की सुबह एक पिकप की ठोकर से साइकिल सवार चोटिल हो गया। आसपास के लोग सरकारी एम्बुलेंस से इलाज के लिए जिला अस्पताल भेजा है। जिला अस्पताल में में इलाज के बाद चोटिल को घर भेजा गया। कस्बा के ही उडवलिया निवासी त्रिम्बनाथ दूबे के पुत्र राम शब्द 33 वर्ष किसी काम से साइकिल से उसका कस्बा में जा रहे थे । तभी अमृत लाल महाविद्यालय के पास पहुँचे ही थे कि पास से गुजर रही पिकप का एक्सल टूट जाने से अगली एक पहिया निकल गयी जिससे पिकप अनियंत्रित हो गई और साइकिल सवार को ठोकर लग गया। घटना स्थल पर पीआरवी 112 पहुंचकर पिकप को थाने पर ले गई वही थाना प्रभारी दिनेश कुमार सरोज ने बताया कि पिकप का एक्सल टूट जाने पर एक व्यक्ति चोटिल हो गया मौके पर पुलिस पहुंचकर पिकप को थाने पर लाई गई है अभी घायल व्यक्ति को तरफ से तहरीर नहीं मिली है तहरीर मिलने पर आगे की कार्यवाही की जायेगी।

## निराश्रित छुट्टा पशुओं को पकड़ने का अभियान शुरू

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। जिलाधिकारी के निर्देश के क्रम में गौ संरक्षण अभियान के अंतर्गत आज प्रातः 6.00 बजे से मुख्यालय एवं मुख्यालय के आसपास तथा जनपद के सभी विकास खंडों में





निराश्रित छुट्टा पशुओं को पकड़ने का अभियान मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ एमपी सिंह के नेतृत्व में चलाया गया। जनपद मुख्यालय पर नगर पालिका परिषद सिद्धार्थनगर के परिक्षेत्र के साथ—साथ नौगढ़ विकासखंड के चारों तरफ घुमंतू निराश्रित छुट्टा पशुओं को पकड़ने का अभियान उप मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी नौगढ़ डॉ आरबी यादव एवं पशुधन प्रसार अधिकारी अरुण कुमार प्रजापति नगरपालिका की पूरी टीम के साथ चलाया गया। नगर पालिका परिषद सिद्धार्थनगर के जनपद मुख्यालय परसाशाह आलम और बीएसए ग्राउंड से 12 जानवरों को पकड़कर कैटल कैचर के माध्यम से कान्हा गौशाला सेमरनार पहुंचाया गया।

## खुनियाव ग्राम पंचायतों मे सरकारी धन के गबन का खेल,लगाया आरोप

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। खुनियांव ब्लाक के अंतर्गत मैनभरिया में सरकार के द्वारा बनाई गई सामुदायिक शौचालय में काफी लापरवाही देखने को मिली जहां एक तरफ केंद्र और प्रदेश सरकार के द्वारा सामुदायिक शौचालय को लेकर करोड़ों रुपए सरकार खर्च करती है तो दूसरी तरफ यहां देखा गया ना तो साफ सफाई की कोई व्यवस्था थी ना ही सामुदायिक शौचालय का आज तक ताला खुला हम आपको बताते चलें कि सरकार की ऐसी महत्वाकांक्षी योजनाओं को लेकर ग्राम प्रधान के द्वारा सरकार की छवि को धूमिल करने में लगे हुए हैं सरकार के द्वारा जिस तरह से हर ग्राम पंचायतों में सामुदायिक शौचालय निर्माण की व्यवस्था को लेकर के कटिबद्ध है तो दूसरी तरफ यहां कुछ ऐसे लोग हैं जो सरकारी धन का बंदरबांट करने में लगे हैं सामुदायिक शौचालय की व्यवस्था को लेकर घर की बहू बेटियों को सर्च के लिए खुले आसमान में ना जाना पड़े जिसके लिए सरकार पूरी तरह से हर ग्राम पंचायतों में सामुदायिक शौचालय की व्यवस्था करती है वहीं दूसरी तरफ देखा गया इस सरकार के द्वारा जो व्यवस्था किया गया है वह सिर्फ दिखावे के लिए साबित होता है सरकार की ऐसी योजनाओं पर विभागीय अधिकारी वह ग्राम पंचायत सचिव ग्राम प्रधान के मिलीभगत का खेल खेला जा रहा है जहां एक तरफ पूरा सिद्धार्थनगर जिला ऑडियो हो गया है तो दूसरी तरफ ऐसी कमियां देखने को मिलती हैं हम आपको बताते चलें कि अगर खुनियांव ब्लॉक के सभी ग्राम पंचायतों को अगर सही तरीके से देखा जाए तो अधिक से अधिक कमियां देखने को मिलेंगी चाहे मनरेगा हो या फिर ग्राम पंचायत के कार्य में अनियमितता देखने को मिलती है वही रमवापुरसीर,परसिया,पड़री,के ग्रामीणों ने बताया कि यहाँ मनरेगा कार्यों मे काफी अनियमितता देखने को मिल रही है यहाँ तो मनरेगा के कुछ ऐसे लोग हैं जहाँ ग्राम प्रधान सौ दो सौ रूपये देकर भुगतान करा लिया जा रहा है जब इसके बारे मे खण्ड विकास अधिकारी खुनियाव से सम्पर्क किया गया तो बीडीओ साहब का फोन रिसीव नहीं हुआ।

## उद्योग व्यापार मंडल ने महिला शौचालय की उठाई मांग

### सीडीओ से मिलकर उद्योग व्यापार मंडल ने महिला शौचालय बनवाने की उठाई मांग

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका बाजार सिद्धार्थनगर। उद्योग व्यापार मंडल ने मंगलवार

को सीडीओ जयेंद्र कुमार से मिलकर महिला शौचालय बनवाने की मांग उठाई है। नगर पंचायत उसका बाजार में महिला शौचालय बनने को लेकर उद्योग व्यापार मंडल ब्लॉक अध्यक्ष ने सीडीओ से मिलकर महिला शौचालय बनवाने की मांग उठाई हैं। ब्लॉक अध्यक्ष धनेश वर्मा ने लिखित पत्र में लिखा कि नगर पंचायत हुए 10 वर्ष पूर्ण हो गए है लेकिन एक भी महिला शौचालय नहीं बना है। महिला शौचालय नहीं बनने से महिलाए समस्या का सामना करती है लेकिन आज तक किसी ने भी सुलभ महिला शौचालय बनवाने के लिए विचार नहीं रखा है और कहे कि उसका बाजार बहुत ही पुराना बाजार है। उद्योग व्यापार मंडल ने सीडीओ से मिलकर महिला सुलभ शौचालय बनवाने की अपील की है।उद्योग व्यापार मंडल ब्लॉक महामंत्री अभिषेक त्रिपाठी, विनोद वर्मा ,प्रेम प्रकाश वर्मा,अमरीश चंद्र वर्मा ,बलराम जायसवाल, वेद प्रकाश जायसवाल,राहुल दिवेदी , मनीष अग्रहरी,पंकज अग्रहरी आदि लोग रहे मौजूद।

## कुत्ते के काटने से 8 वर्षीय बालक की हुई मौत

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका बाजार,सिद्धार्थनगर। स्थानीय नगर क्षेत्र अंतर्गत राजेंद्रनगर के परसा खुर्द टोले में मंगलवार को कुत्तों के नोचने से एक बालक की मृत्यु हो गई। मृतक का नाम सूरज पुत्र लक्ष्मन गुप्ता (8वर्ष) हैद्द। परिजनों के अनुसार वह घर से कुछ दूरी पर स्थित खेत में अकेले गया था वहां मौजूद चार कुत्तों ने उसके पेट ,पैर व अन्य जगह से मांस नोंच डाला जिससे उसका मौके पर मृत्यु हो गई। घटना से परिवार में हाहाकार मच गया।

## दुर्गा अष्टमी पर माता गौरी की उपासना

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका बाजार सिद्धार्थनगर ।इन दिनों मां आदिशक्ति की उपासना का पावन पर्व चौत्र नवरात्रि चल रहा है। नवरात्रि के आठवें दिन को महाअष्टमी या दुर्गा अष्टमी के रूप में जाना जाता है। क्षेत्र के विद्वान पं अवधेश द्विवेदी ने बताया कि इस दिन देवी दुर्गा के आठवें स्वरूप मां महागौरी की पूजा की जाती है। इस बार बुधवार को चौत्र नवरात्रि की अष्टमी तिथि है। मान्यता है कि अष्टमी तिथि पर सच्चे मन से मां महागौरी की पूजा–अर्चना करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इस दिन जप, अनुष्ठान व पूजा पाठ करने से अनंत फल की प्राप्ति होती है। मां महागौरी को ममता की मूरत कहा जाता है। माता रानी के इस स्वरूप की पूजा करने वाले भक्तों के सारे बिगड़े काम बन जाते हैं। साथ ही सभी तरह की बीमारी से मुक्ति मिलती है।

## सम्पादकीय

# अडानी बनाम ओबीसी का मुद्दा

**इसके जवाब में कांग्रेस का कहना है कि राहुल गांधी ने अदानी समूह की आर्थिक गड़बडियों का मुद्दा उठाया था। उन्होंने संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान अदानी और मोदी की एक विशेष विमान की तस्वीर दिखाई थी। राहुल ने आरोप लगाया था कि मोदी से दोस्ती के चलते अदानी को बचाया जा रहा है। कांग्रेस...**

मानहानि मामले में राहुल गांधी की सजा और उनकी लोकसभा सदस्यता खत्म करने का मुदा अब अदानी बनाम ओबीसी के मुद्दे में तब्दील हो गया है। राहुल गांधी ने अगड़ी जाति के दो भगोड़े आर्थिक अपराधियों पर हमला किया तो भाजपा ने इस आधार पर इस मामले को ओबीसी का अपमान बता दिया है क्योंकि उसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नाम भी राहुल गांधी ने लिया था। राहुल गांधी ने नीरव मोदी और ललित मोदी का नाम लिया था और उनको प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से जोड़ा था। इसके बाद उन्होंने सवालिया लहजे में कहा था कि सभी चोरों के सरनेम एक कैसे होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राहुल को इस तरह के सामान्यीकरण से बचना चाहिए। दो चार लोगों की गलतियों के लिए पूरे समाज को दोष नहीं दिया जा सकता है। लेकिन इसमें दो बातें ध्यान रखने वाली हैं। पहली तो यह कि मोदी नाम का कोई जातीय समुदाय नहीं होता है। कई जातियों और उपजातियों के लोग यह सरनेम लगाते हैं और दूसरा मोदी सरनेम वाले लोग ज्यादातर मामलों में पिछड़ी जाति के नहीं होते हैं। जैसे नीरव मोदी गुजरात के हैं और जैन समाज के हैं। इसी तरह ललित मोदी राजस्थान के मारवाड़ी हैं और वैश्य समाज के हैं। दोनों अगड़ी जाति में आते हैं। हां, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बिहार भाजपा के नेता सुशील मोदी जरूर पिछड़ी जाति में आते हैं। बहरहाल, एक तरफ भाजपा दो सवर्ण आर्थिक अपराधियों के मुद्दे को ओबीसी के अपमान में तब्दील करने में लगी है तो दूसरी ओर कांग्रेस पार्टी इसे अदानी समूह के साथ जोड़ रही है। भाजपा कह रही है कि राहुल ने ओबीसी समुदाय का अपमान किया, जिसके लिए सूरत की अदालत ने उनको सजा दी है। इसमें भाजपा या सरकार का कोई हाथ नहीं है। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने इस मामले में यहां तक कहा कि नेहरू गांधी परिवार अपने लिए अलग आईपीसी बनाना चाहता है। इसके जवाब में कांग्रेस का कहना है कि राहुल गांधी ने अदानी समूह की आर्थिक गड़बडियों का मुद्दा उठाया था। उन्होंने संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान अदानी और मोदी की एक विशेष विमान की तस्वीर दिखाई थी। राहुल ने आरोप लगाया था कि मोदी से दोस्ती के चलते अदानी को बचाया जा रहा है। कांग्रेस का दावा है कि इन आरोपों के बाद ही सरकार परेशान हुई और राहुल गांधी के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी हुई। कांग्रेस का कहना है कि लंदन में राहुल के भाषण के बहाने उनकी सदस्यता खत्म करने का प्रयास हुआ और जब लगा कि उससे काम नहीं चलेगा तो सूरत की अदालत के फैसले को बहाना बनाया गया। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि जनता के बीच भाजपा अपना मुद्दा स्थापित करती है या कांग्रेस अदानी का मुद्दा बनाने में कामयाब होती है।

## भगवान शंकर को नर्मदा के समान प्रिय है राम कथा

भगवान भोलेनाथ को राम कथा अत्यंत प्रिय है। श्रीराम कथा बहुत सी सिद्धियों को प्रदान करने वाली है। गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीरामचरित मानस के बाल काण्ड में लिखते हैं कि सिवप्रिय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी। सदगुन सुरगन अंब अदिति सी। रघुबर भगति प्रेम परमिति सी।। अर्थात यह रामकथा शिव जी को नर्मदा जी के समान प्यारी है। यह राम कथा सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाली और सुख संपत्ति की राशि है। यदि आप किसी भी प्रकार की साधना और भौतिकता की वस्तुएं प्राप्त करना चाहते हैं तो राम कथा को सुनें। आप और आपका घर आध्यात्मिक और भौतिक संपत्तियों से सुसज्जित होगा। यह रामकथा सद्गुण रूपी देवताओं के उत्पन्न और पालन पोषण करने के लिए माता अदिति के समान है। श्री रघुनाथ जी की भक्ति और प्रेम की परम सीमा सी है। गोस्वामी तुलसीदास जी भगवान श्री राम को रघुबर के नाम से पुकारते हैं। रघु कुल को याद कीजिए। वे रघुकुल के श्रेष्ठ वर हैं। गोस्वामी जी ने अवधी में वर का बर कर दिया है। प्रबंध काव्य में सम्पूर्ण कथा को कविता के सांचे ढालना पड़ता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ऐतिहासिक कथात्मकता को काविताई की शक्ल में परिणिति करने में अप्रतिम है। जायसी ने भी पद्मावत नामक प्रबंध काव्य रचा है किंतु वे मुस्लिम होकर हिंदुओं के घरों की प्रेम कहानी को सांचे में इसलिए ढालते हैं क्योंकि दिल्ली सल्तनत के इस्लामिक शासन में मुस्लिम होकर मुस्लिम के घर की कहानी लिखने पर वे सत्ता द्वारा दंडित कर दिए जाते। विदेशी शासक अरब की परदा प्रथा के साथ भारत में प्रविष्ट हुए। मध्यकालीन उत्पीड़न और दमन के विरुद्ध गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम कथा के माध्यम से एक ऐसा आंदोलनात्मक धार्मिक अभियान चलाया जिसका स्वप्न एक सुसंस्कृत सामाजिक वातावरण के निर्माण का था। पुनः गोस्वामी तुलसीदास जी रामकथा की विशेषताएं विभिन्न रूपों में गिनाते हैं। वे लिखते हैं कि रामकथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु। तुलसी सुभाग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु।।अर्थात तुलसीदास जी कहते हैं कि रामकथा मंदाकिनी नदी है। सुंदर निर्मल चित्त चित्रकूट है, और सुंदर स्नेह ही वन है, जिसमें श्री सीताराम जी विहार करते हैं। आप देखिए तो पाएंगे कि गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा श्री राम कथा कहने और सुनने के विषय में बतलाया गया है कि श्रीराम कथा पवित्र जीवन प्रदायिनी नदियों के समान है। जिस तरह सभ्यता और संस्कृति का विकास नदियों के किनारे हुआ है ठीक उसी तरह राम कथा के अनुश्रवण मात्र से सुसभ्य और सुसंस्कृत बना जा सकता है।

**लेखक विनय कांत मिश्र/दैनिक बुद्ध का सन्देश**

# फांसी की सजा : विकल्प तलाशने की कवायद

**अपराधियों के प्रति उनकी जीरो टॉलरेंस नीति एवं तुरंत फैसले का रवैया पूर्णतया अनुकरणीय एवं अद्वितीय है। जब तक अपराधी के अंदर अपराध के दंड को लेकर डर और खौफ नहीं जगेगा, तब तक हत्या और बलात्कार जैसे घृणित □त्य अपराधियों के लिए खेल की भांति बने रहेंगे और परिणामतरू तब तक अपराधमुक्त समाज और राष्ट्र की कल्पना व्यर्थ ही होगी। सर्वोच्च न्यायालय, जो न्याय का ...**

शिशिर शुक्ला

सर्वोच्च अदालत द्वारा भारत में मृत्युदंड के तरीके अर्थात फांसी की सजा के विकल्प पर विचार करने के लिए एक समिति के गठन के संकेत दिए गए हैं। खास बात यह है कि सर्वोच्च न्यायस्थल द्वारा ऐसा निर्णय केवल इसलिए है ताकि मृत्युदंड का कोई ऐसा विकल्प तलाशा जा सके जो अपेक्षाकृत कम दर्दनाक और अधिक मानवीयतापूर्ण हो। दूसरे शब्दों में यदि यह कहा जाए कि शीर्ष अदालत द्वारा जघन्य अपराध के दोषियों के लिए यातनारहित मृत्यु का तरीका ढूंढा जा रहा है, तो गलत नहीं होगा। जघन्य अपराधों के लिए मृत्युदंड दिए जाने की व्यवस्था तो बहुत प्राचीन काल से विद्यमान है। हम अपने धर्मग्रंथों रामायण एवं महाभारत में वर्णित विभिन्न घटनाओं पर विचार करें तो भी निष्कर्ष यही निकलता है कि गंभीर अपराधों का परिणाम दोषी को मृत्युदंड द्वारा ही भुगतना पड़ता था। आज की स्थिति भी यही है कि भारत में हत्या एवं बलात्कार जैसे अमानवीय कृत्यों के लिए मृत्युदंड के रूप में फांसी की व्यवस्था है। न्याय व्यवस्था के लचीलेपन का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि 2009 में तमिलनाडु में सात वर्ष के बच्चे के अपहरण एवं हत्या के दोषी के मृत्युदंड को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बीस वर्ष के आजीवन कारावास में सिर्फ इस तर्क के आधार पर तब्दील कर दिया गया कि अपराधी होने के बावजूद

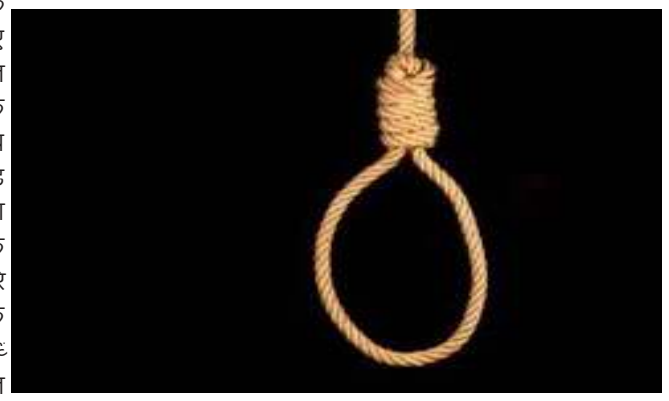

उसमें सुधार की संभावना विद्यमान है। सोलह दिसम्बर, 2012 को दिल्ली में घटित निर्भया कांड को हममें से शायद ही कोई जीवन में भूल पाएगा। हैवानियत की नग्नता एवं दर्दनाक चीखों से युक्त इस निर्मम घटना ने पूरे देश को दहला कर रख दिया था। ध्यातव्य तो है कि एक ऐसे कांड, जिसमें पशुता की सभी हदें पार कर दी गई हों, का इंसाफ होने में सात वर्ष, तीन माह और तीन दिन लग गए। वो भी पीडिघ्ता की मां द्वारा की गई तमाम जटिल कानूनी कोशिशों के बाद। इसे कहीं न कहीं हमारी न्याय व्यवस्था की कमी कहा जाए अथवा आवश्यकता से अधिक लचीलापन, कि वारदात होने एवं दोषी को सजा मिलने के बीच लंबा समयांतराल होता है, जिसमें पीडिघ्त अथवा पीडिघ्ता के परिजनों को न्याय की प्रतीक्षा के साथ–साथ उसे हासिल करने के लिए जी जान लगानी पड़ती है। सर्वोच्च अदालत में दाखिल जनहित याचिका में मृत्युदंड के लिए फांसी के तरीके को क्रूर, तकलीफदेह एवं अमानवीय बताते हुए किसी ऐसे तरीके को अपनाए जाने की मांग की गई है जो मानवीय गरिमा को कायम रखने वाला हो। न्यायालय ने केंद्र सरकार से ऐसे वैज्ञानिक डेटा की उपलब्धता को लेकर प्रश्न किया है, जो मृत्यु के विभिन्न तरीकों में होने वाले कष्ट के मापन से संबंधित हो। याचिकाकर्ता से एक प्रश्न तो निश्चित रूप से किया ही जाना चाहिए कि क्या किसी बहन अथवा बेटी के जीवन से खिलवाड़ करने वाले हैवान द्वारा उस कष्ट के विषय में तनिक भी विचार किया गया था जो पीडिघ्ता द्वारा तड़प–तड़प कर सहा गया। कटु सत्य तो यह है कि आए दिन कभी मासूम बच्चियों से, तो कभी किशोरियों से होने वाले जघन्य अपराध केवल और केवल इस वजह से होते हैं कि अपराधी इनके परिणाम को लेकर निश्चिंत रहता है। उसके अंदर अपराध के दंड को लेकर तनिक भी खौफ नहीं होता। क्या हमारे कानून एवं न्याय व्यवस्था का इतना लचीला होना उचित है कि निर्भया कांड का आरोपी, जिसने सर्वाधिक घृणित एवं दरिंदगीपूर्ण कृत्य को अंजाम दिया, केवल नाबालिग होने के कारण सजा से बच गया। छब्बीस नवम्बर, 2008 को मुंबई में हुए आतंकवादी हमले का आरोपी, जिसने सैकड़ों निर्दोषों को मौत के घाट उतार कर मुंबई के कई स्थानों को रक्तरंजित कर दिया था, चार वर्ष के बाद फांसी के तख्ते तक पहुंच पाया। हमें मानना होगा कि कहीं न कहीं हमारी न्याय व्यवस्था एवं अपराधियों के प्रति उसका रवैया जरूरत से ज्यादा नरम है। कल्पना करें कि फांसी के स्थान पर मृत्युदंड का कोई आसान विकल्प उपलब्ध हो जाने एवं उसे लागू कर दिए जाने पर उसका परिणाम क्या होगा। अपराधियों का अपराध के प्रति हौसला बढने के अतिरिक्त इससे कुछ हासिल नहीं होगा। कानून व्यवस्था की बात की जाए तो इस मामले में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ निस्संदेह रोल मॉडल हैं। अपराधियों के प्रति उनकी जीरो टॉलरेंस नीति एवं तुरंत फैसले का रवैया पूर्णतया अनुकरणीय एवं अद्वितीय है। जब तक अपराधी के अंदर अपराध के दंड को लेकर डर और खौफ नहीं जगेगा, तब तक हत्या और बलात्कार जैसे घृणित कृत्य अपराधियों के लिए खेल की भांति बने रहेंगे और परिणामतरू तब तक अपराधमुक्त समाज और राष्ट्र की कल्पना व्यर्थ ही होगी। सर्वोच्च न्यायालय, जो न्याय का अंतिम और सर्वोच्च द्वार है, को ऐसा निर्णय लेना चाहिए जिससे हम अपराधमुक्त होने की दिशा में कदम बढ़ा सकें।

# 2024 में भारत बिना विपक्ष का दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र?

**तभी एक लब्बोलुआब कि जैसे केजरीवाल और अखिलेश इस मुगालते में हैं कि 2024 के चुनाव में कांग्रेस खत्म होगी तो कांग्रेस में भी सोचा जा रहा है कि ममता, केजरीवाल, अखिलेश 2024 में गुल हो जाएंगे मगर कांग्रेस जिंदा रहेगी। इसलिए वह क्यों एलायंस के लिए भागे! जाहिर है मोदी–शाह 2024 में विपक्ष को मिटा देने की ठाने हुए हैं तो विपक्ष भी आत्महत्या के दसियों उपाय करता हुआ है...**

हरिशंकर व्यास

सन् 2024 भारत का टर्निंग प्वाइंट है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र बिना विपक्ष के होगा। नोट रखें मेरी इस बात को कि सन् 2024 के लोकसभा चुनाव में विपक्ष निपटेगा। पार्टियों के बोर्ड होंगे मगर दुकान खाली। 2024 का चुनाव अखिलेश यादव, ममता बनर्जी, अरविंद केजरीवाल और नीतीश कुमार का आखिरी लोकसभा चुनाव होगा। मतलब यह कि मई 2024 के आम चुनाव के बाद सपा, तृणमूल, आप, जदयू जिंदा तो रहेंगे मगर कम्युनिस्ट पार्टियों, रिपब्लिकन पार्टी व बसपा जैसी हैसियत में। ये क्षत्रप 2024 से 2029 के बीच में प्रादेशिक वजूद भी पूरी तरह गंवा बैठेंगे। नेता मुकद्मों और जेल में फंसे होंगे। सवाल है कैसे यह संभव?

सर्वप्रथम नोट करें कि सन् 2024 का आम चुनाव मोदी का आखिरी चुनाव है। इस चुनाव और उसके बाद के पांच साला कार्यकाल में हिंदू राजनीति अमित शाह–योगी की जमीन बनाने पर फोकस करेगी। करिश्मे के बाद भी सत्ता–पक्की स्थायी रहे इसके लिए विपक्ष को खत्म करने का मिशन। इसमें यूपी, बिहार, बंगाल के 60 प्रतिशत हिंदू वोटों को भगवा में रंगने की प्राथमिकता नंबर एक पर। ध्यान रहे 2019 में भाजपा ने 13 प्रदेशों में कुल वोटों में 50 प्रतिशत से ज्यादा वोट पाए थे। इस लिस्ट पर गौर करें– हिमाचल, गुजरात और उत्तराखंड में भाजपा को क्रमशरू 69 प्रतिशत, 62 प्रतिशत और 61 प्रतिशत वोट मिले थे। झारखंड राजस्थान, मध्य प्रदेश अरूणाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली के छह राज्यों में भाजपा को 57 से 59 प्रतिशत के बीच वोट मिले। फिर तीसरी कैटेगरी के चार राज्यों छतीसगढ़, कर्नाटक, गोवा, चंडीगढ़ में हर जगह भाजपा के 51 प्रतिशत वोट थे। उत्तर प्रदेश में भाजपा के पचास फीसदी वोट थे। इन 13 राज्यों की 273 सीटों में से भाजपा ने 243 सीटें जीतीं।

बिहार और बंगाल का जहां सवाल है तो बिहार की मौजूदा राजनीति में यदि जनता दल यू के वोटों को अलग रखें तो भाजपा और पासवान पार्टी के साझे में तब 32 प्रतिशत वोट थे। दोनों की 23 सीटें हैं। जनता दल यू का वोट तब 22 प्रतिशत था। उधर बंगाल में भाजपा को 2019 के लोकसभा चुनाव में 41 प्रतिशत वोट और 18 सीटें मिली थीं। कुल मिलाकर इन पंद्रह राज्यों की 355 लोकसभा सीटों में भाजपा के पास अभी 284 सीटें हैं। इसे अधिकतम कह सकते हैं। अपनी जगह बात ठीक है। पर सोचें, कि सन् 2024 में यदि यही रिजल्ट रहा तब अखिलेश, ममता, केजरीवाल और नीतीश कुमार के लिए क्या बचेगा? उनके लिए आगे क्या बचेगा? फिलहाल मैं कांग्रेस को अलग रख रहा हूं। मगर हां, यह भी तय मानें सीट जीतने की बात तो दूर कांग्रेस भी इन प्रदेशों में पुराना वोट आधार भी गंवाएगी। इसलिए क्योंकि आम आदमी पार्टी कई राज्यों में उसके वोट वैसे ही खाएगी जैसे उसने गुजरात और गोवा में खाए।

बहरहाल फिलहाल मुद्दा 2024 में इन 15 राज्यों में मोदी की हवा और भाजपा की इलेक्शनरिंग के जादू का है। विपक्ष के मिटने का है। बंगाल, बिहार, यूपी, पंजाब, दिल्ली ये वे पांच राज्य हैं, जिसमें भाजपा को वोट और सीट दोनों बढ़ानी है ताकि केजरीवाल, ममता, नीतीश, अखिलेश का झंझट आगे के लिए हमेशा खत्म हो। दक्षिण के राज्यों में यह आसान नहीं है। पर इन राज्यों में है। भाजपा अपने मकसद को दो तरीकों से साधेगी। एक, हिंदू वोटों (खास तौर पर पिछड़े और लाभार्थी) में 65–70 प्रतिशत लोगों की गोलबंदी से। मसलन पंजाब में यदि 38 प्रतिशत हिंदू हैं तो खालिस्तानी हल्ले में हिंदुओं को पूरी तरह भगवा बना डालना। इससे कांग्रेस, अकाली, आप चुनाव में सिख वोटों में परस्पर लड़ती–भिड़ती होगी वही प्रदेश की 13 सीटों में भी भाजपा अकेले या कुछ परोक्ष तालमेल से सीटें जीत लेगी। कांग्रेस और आप दोनों आपस में लड़ कर ही निपटेंगे।

हां, 2024 के चुनाव तक खालिस्तानी हल्ला ऐसा रहेगा कि केजरीवाल हिंदू और सिख दोनों में न केवल बुरी तरह बदनाम होंगे, बल्कि आश्चर्य नहीं जो अपने नेताओं के साथ जेल में हों। भाजपा के लिए केजरीवाल अब हर तरह से उपयोगी हैं। पंजाब के हिंदुओं को, दिल्ली–हरियाणा के पंजाबियों को अपने पीछे गोलबंद बनवाने के लिए तो आप पार्टी की भ्रष्ट कमीज दिखला कर अपने को उजाला बतलाने के भाजपा प्रचार से लेकर हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान, उत्तराखंड सब तरफ कांग्रेस के वोट कटवाने के लिए भी। संभव ही नहीं है जो सन् 2024 के लोकसभा चुनाव में आप पार्टी एक भी लोकसभा सीट जीत पाए। फिर दिल्ली विधानसभा चुनाव में आप का पूरी तरह सफाया है। यही बंगाल और बिहार में होना है। बंगाल में कम से कम 45 प्रतिशत हिंदू वोटों की गोलंबदी तो बिहार में गैर–यादव हिंदू वोटों की नई गोलंबदी भाजपा की रणनीति है। मामूली बात है मगर बड़ा महत्व है। भाजपा ने सम्राट चौधारी को प्रदेश अध्यक्ष बना कर गैर–यादव पिछड़ों के की गोलबंदी करवाने के संकेत दिए इसलिए लोकसभा चुनाव में जनता दल यू को बिहार में 15 प्रतिशत (हां, जदयू–राजद–कांग्रेस–लेफ्ट का एलायंस यदि पूरी ताकत से लड़ा तो अलग बात) वोट भी नहीं मिल पाएगा। वहां मुस्लिम बहुल इलाकों में भाजपा की अलग रणनीति है तो पिछड़ा बहुल में अलग।

इसी एप्रोच में भाजपा बंगाल और यूपी में काम कर रही है। मुस्लिम बहुल रामपुर में भाजपा जीती है तो बंगाल में भी इसलिए जीतेगी क्योंकि जैसे उत्तर प्रदेश में मायावती के बाद अब अखिलेश यादव को मुसलमान भाजपा का पित्रू समझने लगा है वैसी ही इमेज ममता बनर्जी की बंगाल के मुसलमानों में बनती हुई है। जो काम केजरीवाल हरियाणा, राजस्थान, पंजाब में कांग्रेस को डुबाने के लिए करेंगे वैसा ही काम कांग्रेस–लेफ्ट यूपी और बंगाल में मोदी विरोधी घोर सेकुलर तथा मुस्लिम वोट पा कर ममता–अखिलेश के लिए करेंगे। कोई माने या न माने मोदी विरोधी तमाम सेकुलर वोट और मुसलमान मन ही मन राहुल गांधी और कांग्रेस को मोदी विरोधी लड़ाई का असल जूझारू नेता मान रहा है।

# आईपीएल 2023 से पहले शाहरुख खान ने फैंस के लिए लॉन्च किया नाइट क्लब ऐप

इंडियन प्रीमियर लीग 2023 की शुरुआत में चंद दिनों का समय शेष बचा है। इस लीग के 16वें सीजन की धमाकेदार शुरुआत से पहले कोलकाता नाइट राइडर्स ने फैंस के लिए खास तोहफा पेश किया है। कोलकाता नाइट राइडर्स यानी केकेआर के सह–मालिक शाहरुख खान ने फैंस के लिए एक ऐप लॉन्च किया है। इस ऐप को शाहरुख खान ने मजेदार वीडियो के शेयर करने के साथ लॉन्च किया है। इसमें ऐप को लॉन्च करने के साथ ही इस ऐप की टैगलाइन पर भी फोकस में रखा गया है जो किष्एकदुम फटाफटी ऐपष् है। इस ऐप का उद्देश्य सभी तरह के उत्साह को लाइव और सीधे प्रशंसकों की पहुंच में आसानी से लेकर जाना है। वहीं इसमें कई तरह की सुविधाएं भी फैंस के लिए पेश की गई है, जिससे उनका पूरे आईपीएल सीजन के दौरान व्यस्त और मनोरंजन हो सकेगा।

नाइट क्लब ऐप लॉन्च के संबंध में केकेआर की चीफ मार्केटिंग अधिकारी बिंदा डे ने कहा कि केकेआर का अपने फैंस के साथ हमेशा एक विशेष बंधन रहा है। हम अपने प्रशंसकों के प्रति प्रतिबद्धता को और आगे ले जाना चाहते थे। कोरोना वायरस पैंडेमिक के बाद हम तीन वर्षों के बाद अपने घरेलू मैदान ईडन गार्डन्स पर खेलेंगे। बता दें कि नाइट क्लब ऐप के जरिए फैंस के घर तक आसानी से टीम का उत्साह साझा किया जा सकेगा।

नाइट क्लब ऐप की सबसे रोमांचक विशेषताओं में से एक उसका लॉयलटी प्रोग्राम है, जिससे फैंस को रिवॉर्ड भी मिलेगा।

फैंस इस ऐप से जुड़कर अधिक से अधिक अंक अर्जित कर सकते है। इन अंकों को अर्जित कर फैंस केकेआर की स्पेशल मर्जेंडाइस लेने के लिए रिडीम कर सकते है। इसके अलावा ऐप पर फैंस के लिए खास प्रोग्राम व प्रतियोगिता का आयोजन होगा जिसमें हिस्सा लेने वालों और जीतने वाले फैंस को केकेआई की टीम के साथ मुलाकात करने का मौका मिलेगा।

ऐप में गेम जोन

ऐप में एक गेम जोन भी होगा जहाँ फैंस मैच–डे गेम्स में भाग ले सकते हैं और स्पेशल गिफ्ट्स जीत सकते हैं। गौरतलब है कि कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाड़ियों को बेहतर तरीके से जानने और खेल में शीर्ष पर रहने की इच्छा रखने वाले फैंस के लिए नाइट क्लब ऐप का मुख्य आकर्षण बनकर उभरेगा। इस ऐप पर फैंस को केकेआर कैंप की विस्तृत तस्वीर देखने को मिलेगी जिसमें आर्टिकल्स, फोटो, वीडियो आदि भी देखने को मिलेंगे। ऐप में एक मेगास्टोर भी शामिल होगा जहां से फैंस आधिकारिक केकेआर मर्चेंडाइज खरीद सकते हैं और टीम के लिए अपना समर्थन दिखा सकते हैं।

# संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में रूस को फिर लगा झटका, नॉर्ड स्ट्रीम गैस पाइपलाइन में ब्लास्ट की जांच की रूसी मांग खारिज

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने रूस से, बाल्टिक सागर होते हुए यूरोप को प्राकृतिक गैस की आपूर्ति करने वाली पाइपलाइन में हुए विस्फोट की जांच करने के रूस के आग्रह को सोमवार को नामंजूर कर दिया रूसी समाचार एजेंसी टीएएसएस ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने सोमवार को नॉर्ड स्ट्रीम तोड़फोड़ की अंतरराष्ट्रीय जांच पर रूसी–चीनी प्रस्ताव का समर्थन नहीं किया। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा किसी प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए यह जरूरी है कि उसके पक्ष में परिषद के 15 सदस्यों में से नौ का वोट मिले तथा किसी भी स्थायी सदस्य द्वारा 'वीटो' का इस्तेमाल नहीं किया जाए। इस प्रस्ताव का रूस, चीन और ब्राजील ने समर्थन किया, अल्बानिया, ब्रिटेन, गैबॉन, घाना, माल्टा, मोजाम्बिक, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इक्वाडोर और जापान ने भाग नहीं लिया।

संकल्प को बेलारूस, वेनेजुएला, डीपीआरके, निकारागुआ, सीरिया और इरिट्रिया ने भी सह–लेखक बनाया था। हालाँकि, ये राज्य सुरक्षा परिषद के सदस्य नहीं हैं और उन्होंने मतदान में भाग नहीं लिया। रूसी समाचार एजेंसी जी ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद सोमवार को नॉर्ड स्ट्रीम 1 और नॉर्ड स्ट्रीम 2 पाइपलाइनों की तोड़फोड़ की अंतरराष्ट्रीय जांच पर एक रूसी–चीनी मसौदा प्रस्ताव पर मतदान करेगी। प्रस्तावित मसौदे का पाठ संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस नॉर्ड स्ट्रीम 1 और नॉर्ड स्ट्रीम 2 गैस पाइपलाइनों पर तोड़फोड़ के कार्य के सभी पहलुओं की व्यापक, पारदर्शी और निष्पक्ष जांच करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्वतंत्र आयोग की स्थापना करते हैं जिसमें पहचान करना भी शामिल है। अपराधियों, प्रायोजकों, आयोजकों और उनके सहयोगियों। अमेरिका के उप राजदूत रॉबर्ट वूड ने कहा कि जब स्वीडन, डेनमार्क और जर्मनी मामले की व्यापक, पारदर्शी और निष्पक्ष जांच कर रहे हैं तब संयुक्त राष्ट्र द्वारा छानबीन की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि जांच का यह आग्रह, मौजूदा राष्ट्रीय जांच के काम को बाधित करने और उनके किसी भी निष्कर्ष को पक्षपाती बताने का प्रयास है तथा यह मांग सच सामने लाने की कोशिश कतई नहीं है। पाइपलाइन को नॉर्ड स्ट्रीम 1 और और नॉर्ड स्ट्रीम 2 के तौर पर जाना जाता है। इसमें अधिकतर हिस्सेदारी रूस की सरकारी ऊर्जा क्षेत्र की बड़ी कंपनी गजप्रोम के पास है। इन लाइन में पिछले साल 26 सितंबर को विस्फोट हुआ था। यूरोपीय राष्ट्रों की जांच अब तक किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुंची है या कम से कम उन्हें अब तक सार्वजनिक नहीं किया गया है।

# टेस्ट मैच में सबसे कम स्कोर पर आउट होने का रिकॉर्ड है Newzealand के नाम, 26 रन बना सकी थी टीम

क्रिकेट अनिश्चितताओं का खेल है। इस खेल में कब कौन सी टीम किस पर भारी पड़ जाए इसका पहले से अनुमान लगाना बिलकुल संभव नहीं है। पल में हारने वाली टीम जीत जाती है तो जीतने वाली टीम के हाथ से मुकाबला निकलने में अधिक समय नहीं लगता है। अनिश्चित्ताओं के साथ ही ये रिकॉर्ड और इतिहास का भी खेल है। कई ऐसे रिकॉर्ड हैं जो टीम और खिलाड़ियों को गौरवान्वित करते हैं जबकि कई शर्मसार करने पर मजबूर भी करते है।

ऐसा ही एक रिकॉर्ड न्यूजीलैंड की टीम के नाम है जो कीवी टीम ने 28 मार्च के दिन ही बनाया था, जिसे टीम हर हाल में भूलना चाहेगी। दरअसल ये शर्मनॉक रिकॉर्ड न्यूजीलैंड की टीम ने इंग्लैंड की टीम के खिलाफ टेस्ट मैच खेलते हुए 28 मार्च 1955 को बनाया था। ऑकलैंड के इडेन पार्क में खेले गए इस मुकाबले में इंग्लैंड की टीम ने ऐसी तूफानी गेंदबाजी की थी कि न्यूजीलैंड की पूरी टीम सिर्फ 26 रनों के मामूली स्कोर पर ही ढ़ेर हो गई ती। टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में किसी भी टीम द्वारा बनाया गया 26 रन न्यूनतम स्कोर है।

इंग्लैंड की टीम ने इस टूर्नामेंट में शानदार आगाज किया था। डुनेडिन यूनिवर्सिटी के ओवल में खेले गए पहले टेस्ट मुकाबले में इंग्लैंड ने दमदार खेल दिखाते हुए आठ विकेट से जीत हासिल की थी। दूसरे मुकाबले में भी इंग्लैंड ने अपने आत्मविश्वास का दमदार प्रदर्शन करते हुए न्यूजीलैंड की टीम को 200 रनों के स्कोर पर ऑलआउट किया था। इसके बाद दूसरी पारी में न्यूजीलैंड की टीम इंग्लैंड के खिलाड़ियों के आत्मविश्वास का सामना नहीं कर सकी। इंग्लैंड की टीम ने दमदार गेंदबाजी और फील्डिंग की बदौलत न्यूजीलैंड के सभी खिलाड़ियों को महज 26 रन के स्कोर पर पवेलियन लौटा दिया।

पहली पारी में इंग्लैंड की टीम ने 246 रन बनाए थे, जिसके बाद उसके बाद 46 रनों की बढ़त थी। मगर न्यूजीलैंड की टीम दूसरी पारी खेलने के लिए जैसे ही मैदान पर उतरी तो ताश के पत्तों की तरह ढ़ह गई। न्यूजीलैंड को 20 रनों से ये मुकाबला हारना पड़ा था। इस पारी में सर्वाधिक साझेदारी छठे विकेट के लिए थी जो आठ रनों की थी। न्यूजीलैंड के कप्तान ज्योफ रैबोन ने 7, हैली केव ने 5 रन बनाकर ये पारी की सबसे अधिक साझेदारी बनाई थी। इस मुकाबले में जितने बल्लेबाज शून्य के स्कोर पर आउट हुए थे वो भी रिकॉर्ड है। न्यूजीलैंड के स्कोर को 26 रन तक ले जाने में बर्ट स्टक्लिफ ने अहम भूमिका निभाई थी, जिन्होंने कुल सर्वाधिक 11 रन बनाए थे। मुकाबले के दौरान चार बल्लेबाज खाता खोले बिना ही पवेलियन लौटे थे।

तीन खिलाड़ियों ने महज एक–एक रन का स्कोर बनाया था। इंग्लैंड के गेंदबाजों ने इस मुकाबले में दमदार प्रदर्शन करते हुए किवी बल्लेबाजों को क्रीज पर टिकने का मौका ही नहीं दिया था। इंग्लैंड के बॉब एपलयार्ड और ब्रायन स्टैथम ने क्रमशरू चार और तीन विकेट हासिल किए थे।

# रामचरितमानस एवम रामलीला का भव्य आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी रामचरितमानस एवं रामलीला का भव्य आयोजन भवानी गांव के फूलमती देवी के प्रांगण में आयोजित किया जा रहा है इस आयोजन के प्रारंभ में फूलमती देवी के प्रांगण से भव्य कलश यात्रा निकाली गई जो लगभग 5 किलोमीटर तक चलकर पुनः प्रांगण में वापस हुई इस कलश यात्रा में क्षेत्रीय पुरुष महिला एवं बच्चे काफी संख्या में मौजूद रहे। भवानी गांव में रामचरितमानस का 46 वा एवं रामलीला का आयोजन करते 100 वर्ष से ऊपर हो गए इस अवसर पर ग्राम सभा के साथ साथ क्षेत्रीय लोगों की काफी भीड़ मौजूद रही इसके साथ ही रात्रि में रामलीला का मंचन प्रारंभ किया जाएगा ।उक्त अवसर पर ग्राम प्रधान पति दामोदर पांडे ,श्यामू मिश्रा, बेचन देव पांडे, बच्चा पांडे समेत गांव की सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

## कविता.

नवरात्रि के आठवें दिन मैया
महागौरी का रूप ले आती हैं,
दुर्गा जी के रूप में
मां गौरी पूजी जाती हैं।
अष्टमी के दिन मां को
नन्हीं कन्याओं में देखा जाता है,
बड़ा ही सलोना रूप मैया का
भक्तों के मन में बस जाता है।
शिवजी को पाने के लिए मां
कठिन तपस्या करती हैं,
धूप में तपने के नाते मां
श्यामा गौरी हो जाती हैं।
तब शिव जी प्रसन्न होकर
मां को स्वीकार करते हैं,
मां का शरीर फिर गंगाजल से
गौर वर्ण में बदलते हैं।
मां गौरी विद्युत के समान
अत्यंत कांति वाली हैं,
दुर्गाष्टमी है दिन मैया का
महागौरी भोली भाली हैं।
जो मैया को बुलाता मन से
मां सबकी सुनने वाली हैं,
कण–कण में हैं व्याप्त मैया
करती भक्तों की रखवाली हैं।
जय माता दी....

डॉ सीमा मिश्रा/
दैनिक बुद्ध का सन्देश

# आटे के लिए Angry हुआ Hungry पाकिस्तान, भूख से लुटेरी बनी अवाम, एक–एक बोरी के लिए भिड़े 6–6 लोग

पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान के हालात किसी से छिपे नहीं है। आर्थिक बदहाली और तंगहाली झेल रहे मुल्क की मुसीबत थमने का नाम नहीं ले रही है। रमजान के महीने में पाकिस्तान में दंगा हो रहा है। आटा लूटने के लिए पाकिस्तानी एक–दूसरे की जान लेने पर आमदा हो गए हैं। पाकिस्तान से एक तस्वीर सामने आई है जिसमें आटे के ट्रक को लूटा जा रहा है। हैरान कर देने वाली तस्वीरें पाकिस्तान के पेशावर शहर से सामने आई हैं। पेशावर में सैकड़ों लोगों की भीड़ में आटे के ट्रक पर अटैक कर दिया गया। एक–दो नहीं बल्कि पाकिस्तान के कई शहरों में आटे के लिए लाइन में लगे लोगों की तस्वीरें भी सामने आ रही हैं। कई शहरों में तो आटे के चक्कर में लोगों की जान भी जा चुकी हैं। सस्ता आटा मिलने की खबर सुनते ही पाकिस्तान में भगदड़ मच जाती है। पेशावर से ऐसी ही तस्वीर सामने आई। आटे के एक ट्रक को सैकड़ों लोगों ने घेर लिया। एक बोरी आटा नीचे आते ही सैकड़ों हाथ उसकी तरफ लपकते हैं। ये ट्रक आटे तो आटे की डिलीवरी करने आया था। लेकिन ट्रक पर इतनी बोरियां नहीं थी, जितनी जनता हाथ फैलाए खड़ी थी। इंतजार करने की बजाए लोग खुद ही ट्रक पर चढ़कर आटा उतारने लगे। मिनटों में ही पाकिस्तानियों ने मिलकर पूरा ट्रक लूट लिया। जितनी भीड़ ट्रक पर चढ़ी नजर आई वो तो केवल ट्रेलर मात्र था। उससे ज्यादा लोग तो आसपास से भागकर वहां चारो–ओर एकट्ठा नजर आए। एक–एक बोरी के लिए छह–छह लोग लड़ रहे जंग लड़ते दिखे। पाकिस्तान में सिंसेटिव प्राइस इंडिकेटर के आधार पर महंगाई ने एक नया रिकॉर्ड बनाया है। 22 मार्च 2023 को महंगाई ने पिछले साल की तुलना में 47 फीसदी के आंकड़ों को छू लिया। इस इंडिकेटर से ये साफ दिख रहा है कि सामान्य चीजों का दाम पाकिस्तान में हाई है। 51 सामान के दाम को ट्रैक किया गया। जिसमें 26 सामान की कीमतें बढ़ी हैं। 13 चीजों के दाम घटे हैं, 13 चीजों के दाम में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

# PLI scheme में 11 कंपनियां बनाएंगी 39,600 मेगावॉट क्षमता के सौर पीवी

नयी दिल्ली। रिलायंस, इंडोसॉल और फर्स्ट सोलर जैसी 11 कंपनियों को सरकार की उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के दूसरे चरण में कुल 39,600 मेगावॉट क्षमता के सौर फोटोवोल्टिक के विनिर्माण का काम मिला है। सरकार ने 39,600 मेगावॉट क्षमता वाले घरेलू सौर पीवी मॉड्यूल के विनिर्माण का काम 11 कंपनियों को आवंटित किया है। इन सौर पीवी मॉड्यूल के उत्पादन संबंधी परियोजना के लिए कुल 14,007 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। बिजली मंत्रालय ने मंगलवार को बयान में यह जानकारी देते हुए कहा कि पीएलआई योजना के तहत उच्च दक्षता वाले सौर पीवी मॉड्यूल बनाने के दूसरे चरण में इन कंपनियों को चुना गया है। इनमें से 7,400 मेगावॉट की विनिर्माण क्षमता के अक्टूबर, 2024 तक पूरा हो जाने की उम्मीद है जबकि 16,800 मेगावॉट क्षमता अप्रैल, 2025 तक चालू हो जाएगी। बाकी 15,400 मेगावॉट क्षमता अप्रैल, 2026 तक परिचालन में आने की संभावना है। दूसरे चरण की सौर पीवी पीएलआई परियोजनाओं के जरिये 93,041 करोड़ रुपये का निवेश आने की उम्मीद है। इससे एक लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिलने की संभावना है जिसमें से 35,000 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। बिजली मंत्री आर के सिंह ने पीएलआई योजना की सफलता का जिक्र करते हुए कहा कि भारत उच्च प्रौद्योगिकी वाले सौर पीवी मॉड्यूल के उत्पादन से जुड़ी मूल्य शृंखला में लगातार आगे बढ़ रहा है। यह देश को सौर उपकरण विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। सौर उपकरणों की पीएलआई योजना के पहले चरण में कुल 8,737 मेगावॉट की क्षमता वाली परियोजनाएं आवंटित की गई थीं। इस तरह दोनों चरणों के पूरा होने के बाद देश की कुल सौर पीवी उत्पादन क्षमता 48,337 मेगावॉट हो जाएगी।

# थाना बभनी पुलिस ने चोरी की दो अदद मोटर साईकिल व अन्य सामान बरामद किया

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन में चोरी करने वाले गिरोह के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम




में एवं अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन के पर्यवेक्षण में क्षेत्राधिकारी दुद्धी के नेतृत्व में दिनांक 28 मार्च को थाना बभनी पुलिस द्वारा थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0–33ध्2023 धारा 457, 380, 436 भादवि में वांछित अभियुक्तगण 01. रादिहल उर्फ गुड्डू प्रजापति पुत्र रामकरन, निवासी ग्राम नेमना, थाना बीजपुर, जनपद सोनभद्र उम्र लगभग 25 वर्ष 02. लखन लाल पुत्र दादू राम प्रजापति, निवासी जनकपुर, थाना रघुनाथनगर, जनपद बलरामपुर(छत्तीसगढ़) उम्र लगभग 32 वर्ष को थाना बभनी क्षेत्र के शीशा टोला से गिरफ्तार कर उनके कब्जे से दो अदद मोटर साईकिल, दो अदद मोबाइल, तीन अदद ब्लूटूथ, एक अदद सैमसंग की पैड मोबाइल एवं एक अदद सोनाटा घड़ी बरामद किया गया। उक्त बरामदगी एवं गिरफ्तारी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 411, 414 भादवि की बढोत्तरी की गयी।

# घर में लगी आग अनाज सहित बाइक जलकर खाक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गोला गोरखपुर। गोला थाना क्षेत्र के ग्राम गोपालापुर गाँव में घर

में भीषण आग लग जाने से अनाज सहित बाइक जलकर खाक हो गई। मौके पर पहुंची फायर बिग्रेड की गाड़ी आग बुझाने पर काबू पाई। गोला थाना क्षेत्र के गोपालपुर गांव के दूधनाथ पासवान के घर में भीषण आग लग गई। थाना क्षेत्र के गोपलापुर गांव के दूधनाथ पासवान के घर में भीषण आग लग जाने से काफी नुकसान हुआ। आग का कारण का पता नहीं चल पाया।

# पूर्व सांसद रिजवान जहीर के दामाद की जमीन कुर्क

दैनिक बुद्ध का सन्देश

बलरामपुर। तुलसीपुर पूर्व सांसद रिजवान जहीर द्वारा अवैध रुप

से अर्जित सम्पत्ति से अपने दामाद रमीज नेमत के नाम से स्थानीय काशीराम कालोनी के निकट क्रय की गयी भूमि जिसकी अनुमानित कीमत लगभग 4 करोड़ 75 लाख 86 हजार रूपये है, प्रशासन ने गैगेस्टर एक्ट के अन्तर्गत कुर्कध्जब्त किया। जिला मजिस्ट्रेट के आदेश संख्या 195–2022 के क्रम में सोमवार को पुलिस अधीक्षक केशव कुमार के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक श्रीमती नम्रिता श्रीवास्तव उप जिलाधिकारी मंगलेश दुबे क्षेत्राधिकारी राघवेन्द्र सिंह प्रभारी निरीक्षक प्रमोद सिंह तथा प्रभारी निरीक्षक गैसड़ी व दर्जनों महिला पुरुष आरक्षियों की उपस्थिति में सोमवार को प्रदेश स्तर पर चिन्हित अपराधी माफिया के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में स्थानीय थाना अंतर्गत निवासी पूर्व सांसद रिजवान जहीर जो नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष फिरोज पप्पू हत्याकांड में षड्यंत्रकारी आरोप में जेल में निरूद्ध है द्वारा अवैध रुप से अर्जित सम्पत्ति से अपने दामाद रमीज नेमत के नाम से खरीदी गयी जमीन गाटा संख्या 807–0.4326 हे0 जिसकी वर्तमान अनुमानित कीमत लगभग 4 करोड़ 75 लाख 86 हजार रूपये है, को यू0पी0 गैंगेस्टर एक्ट के अन्तर्गत कुर्कध्जब्त किया गया। कुर्की के पूर्व स्थानीय पुलिस ने नगर में डुग्गी मनादि कर सूचना प्रसारित की।

# देवी पाटन मेले में जाने के लिए सड़क है पुल है, लेकिन सरकारी बस सेवा नहीं

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उतरौलाध्बलरामपुर। उतरौला से राजकीय देवी पाटन मेले में जाने के लिए सड़क है पुल है लेकिन सरकारी बस सेवा नहीं है। मजबूरन श्रद्धालुओं को उतरौला से सरकारी बस से बलरामपुर जाना पड़ता है और उसके बाद बलरामपुर से राजकीय देवी पाटन मेले में जाने के लिए सरकारी बस का सहारा लेना पड़ता है। इस तरह उतरौला तहसील क्षेत्र के श्रद्धालुओं को पचासों किमी का चक्कर लगाना पड़ता है। उतरौला तहसील मुख्यालय से ऐतिहासिक राजकीय देवी पाटन मेले में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए राप्ती नदी के पिपरा घाट व सिंगार जोत घाट पर दसों करोड़ की लागत से दो पक्के पुल का निर्माण शासन ने कराया। वहीं इस पुल पर जाने के लिए पक्की सड़क का निर्माण कराया गया, सड़क व पुल बन जाने के बाद उतरौला तहसील क्षेत्र के लोग निजी वाहनों से इस मार्ग। पर चलकर पुल पार करके देवी पाटन मंदिर को पहुंच जाते हैं। इससे आमजन श्रद्धालुओं को लगभग पचास किमी दूर का चक्कर नहीं लगाना पड़ता है। सड़क व पुल होने के बावजूद किसी अधिकारी अथवा जनप्रतिनिधियों ने इस मार्ग पर सरकारी बस सेवा का संचालन नहीं कराया। हालत यह है कि इस मार्ग पर राजकीय मेले के दौरान भी सरकारी बस सेवा नहीं चलाई जाती है। एआर एम बीरेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि राजकीय बस सेवा उतरौला से बलरामपुर होते हुए देवी पाटन मंदिर मेले को जाने के लिए बस सेवा उपलब्ध है। यात्रियों की सुविधा के लिए बसों की संख्या बढ़ा दी गई है।

# राज्यपाल सिक्किम लक्ष्मण प्रसाद आचार्य का आगमन 30 मार्च को

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। प्रभारी अधिकारी प्रोटोकाल सोनभद्र ने जानकारी देते हुए बताया कि मा0 राज्यपाल सिक्किम लक्ष्मण प्रसाद आचार्य का जनपद सोनभद्र में 30 मार्च, 2023 को भ्रमण कार्यक्रम निर्धारित है, राज्यपाल का 30 मार्च,2023 को पूर्वान्ह 11.00 बजे से 12.30 बजे तक होटल अरिहन्त राबर्ट्सगंज सोनभद्र में आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित होंगें, इसके बाद अपने गनतब्य के लिए रवाना होंगें।

# विकास के अधूरे कार्यों और दूषित पेयजल की शिकायत पर भड़के प्रभारी मंत्री

महराजगंज। जिले के प्रभारी मंत्री दयाशंकर मिश्र की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला योजना की बैठक हुई। उन्होंने कहा कि जिले में कराए जाने वाले विकास कार्य अध्ाूरे रहना समाज के लिए कलंक है। अफसरों को चेताया कि विभागीय अधिकारी निर्माण कार्यों को मानक व गुणवत्ता के अनुरूप पूरा कराएं। उन्होंने अनुपस्थित अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। कृत्रिम गर्भाधान के लिए धन की मांग की शिकायत मिलने पर ऐसे पशु मित्रों की सेवा समाप्त करने के लिए कहा। बोरिंग का सत्यापन कराने के लिए कहा। पौधरोपण कार्यक्रम के बारे में डीएफओ पुष्प कुमार से जानकारी प्राप्त की। इस दौरान वित्तीय वर्ष 2022–23 की तीन अरब 85 करोड़ 63 लाख के परिव्यय को अनुमोदित किया गया। शिक्षक विधायक ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग से पूछा कि मुख्य मार्ग से जुड़े 250 से अधिक जनसंख्या वाले मजरों की संख्या बताएं तो वह बगलें झांकने लगे। वहीं, उपायुक्त मनरेगा यह बताने में अक्षम रहे कि मनरेगा से बने आदर्श जलाशय की ऊंचाई का स्तर क्या है। शिक्षक विधायक ने कहा कि जिले के चिकित्सालयों में विशेषज्ञ डॉक्टरों की कमी है। अवैध अल्ट्रासाउंड सेंटर चल रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग तमाशबीन बना हुआ है। प्रभारी मंत्री ने इस पर सीएमओ को टीम बनाकर अवैध सेंटरों की जांच कराने के निर्देश दिए। शिक्षक विधायक ने 10 बजे बैठक में बुलाने तथा एक घंटे तक बिना सूचना के बैठाने का मामला उठाया। इस पर प्रभारी मंत्री ने भविष्य में इसकी पुनरावृत्ति न किए जाने के लिए कहा। प्रभारी मंत्री ने परिषदीय स्कूलों में समय से किताबों की उपलब्धता के बारे में पूछा। इस पर प्रभारी बीएसए के संतोषजनक जवाब न देने पर नाराजगी जताई। सदर विधायक जयमंगल कन्नौजिया ने कहा कि जंगल के किनारे तार–बाड़ न होने से किसानों की फसल बर्बाद हो रही है। सिसवा विधायक प्रेमसागर पटेल ने मनरेगा में जेसीबी के प्रयोग को रोकने की बात कही। नौतनवां विधायक ऋषि त्रिपाठी ने वन क्षेत्रों में रहने वाले गरीबों को अनावश्यक रूप से परेशान न किए जाने का मामला उठाया। पनियरा विधायक ज्ञानेंद्र सिंह ने भी निर्माण कार्यों को तीव्र गति से पूरा कराने की बात कही।

जिला पंचायत सदस्यों ने भी क्षेत्रीय समस्याओं को दूर कराने की मांग की। प्रभारी मंत्री ने जनप्रतिनिधियों के सुझावों पर अमल करते हुए कार्य करने का निर्देश विभागीय अधिकारियों को दिए। संचालन जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी अजय श्रीवास्तव ने किया। इस दौरान जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार, पुलिस अधीक्षक डॉ. कौस्तुभ, जिला पंचायत अध्यक्ष रविकांत पटेल समेत जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश बनेगा देश के विकास का इंजनः प्रभारी मंत्री दयाशंकर मिश्र ने प्रेसवार्ता में कहा कि उत्तर प्रदेश देश के विकास का इंजन बनेगा। केंद्र व प्रदेश सरकार की बेहतर नीतियों की बदौलत प्रदेश की छवि में सुधार हो रहा है। पहले प्रदेश जहां आपराधिक कृत्यों के कारण जाना जाता था, वहीं, भाजपा शासन में सुशासन, अनुशासन व विकास के लिए। निवेशकों को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने उचित माहौल बनाया है। सभी उसका लाभ उठाएं। उन्होंने कहा कि एक जनपद–एक उत्पाद, एक जनपद एक मेडिकल कॉलेज के माध्यम से स्वरोजगार व चिकित्सा सुविधा को बढ़ावा देने का प्रयास जारी है।

# पाइप में लिकेज से हजारों लीटर पानी बर्बाद हुआ

देवरिया। नगर पालिका के जलकल विभाग के गेट पास सुबह 9 बजे पाइप लाइन में लिकेज हो गई। इससे हजारों लीटर गैलन पानी बर्बाद हो गया है। वहीं आने–जाने में नगर के लोगों को परेशानी हुई। आससास के रहने वाले लोगों ने बताया कि जर्जर होने की वजह से पाइप में अपने आप लिकेज हो गई। नगर पालिका के कर्मचारियों ने रबर के ट्यूब से जैसे–तैसे पाइप को बांधा है। पाइप से पानी का रिसाव जारी है। शहर में जलकल की करीब तीस वर्ष पुरानी पाइपें जर्जर हो चुकी हैं। इस कारण आए दिन लीकेज हो जा रही है और फट जा रही हैं। इससे स्वच्छ पेयजल की बर्बादी हो रही है। लोगों के घरों में जलकल आपूर्ति का गंदा पानी भी पहुंच जा रहा है। इतना ही नहीं काफी दिनों तक पानी जमा होने से सड़क भी टूट जा रही है।

शहर की जलापूर्ति के लिए डाली गई पाइप लाइन के लीकेज और फटने की समस्या से लोग जूझ रहे हैं। अगर पाइप फट जाए तो उसे बनाने में कई दिन लग जा रहे हैं। जिससे जिम्मेदार अफसर बेपरवाह हैं। नगर पालिका के जलकल विभाग के गेट के पास ही पाइप लाइन में लिकेज थी। पर हालत यह रही कि पानी की बर्बादी होती रही और उसे पूरे दिन में ठीक नहीं किया जा सका। किसी तरह कुछ कर्मचारियों ने जुगाड़ से पाइप से निकल रहे पानी बंद किए थे। शहर के कसया ढाले के पास लकड़ीहट्टा को जाने वाली मुख्य सड़क के पास पाइप लाइन फटी थी यहां तो हालत यह थी कि स्वच्छ जल नाले में बह रहा था। पर इसकी सुधि लेने वाला कोई नहीं था।

आए दिन हो रहे लीकेज

देवरिया। शहर में तीन महीने के दौरान फोरलेन से लगायत गली, मोहल्लों में जलकल की पाइप फटने से लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। अक्तूबर माह में महिला थाने के पास, शहीद गेट, एसपी आफिस के पास पाइप लाइन फट गई थी। इसके कारण रामनाथ देवरिया मोहल्ले में लोगों के घरों में गला पानी चला गया था। इससे करीब 40 लोग उल्टी, दस्त के शिकार हो गए थे। अभी कुछ दिन पहले कोतवाली चौराहे पर जलकल की पाइप फट गई थी। ठीक होने के बाद सड़क जैसे–तैसे छोड़ दी गई। शहर के साकेत नगर में पाइप लाइन फटने के कारण टूटी सड़क जैसे–तैसे पड़ी हुई है। शिव मंदिर के पास दो जगहों पर पाइप लाइन फटने के कारण सड़क के बीच में ही गड्ढा हो गया है।

## वाहन की चपेट से किसान की मौत

फरेंदा। कस्बे से देर रात गाजर बेच कर वापस घर जा रहे किसान की फरेंदा दक्षिणी बाईपास पर वाहन की चपेट में आने से मौत हो गई। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। कैम्पियरगंज थाना क्षेत्र के लोहरपुरवा निवासी रामराज (65) रोज फरेंदा बाजार में गाजर बेचने आते थे। वह रोज की भांति गाजर बेच कर रात में घर लौट रहे थे। दक्षिणी बाईपास के निकट अज्ञात वाहन की चपेट में आ गए। इससे घटनास्थल पर ही उनकी मौत हो गई। प्रभारी निरीक्षक सत्येंद्र राय ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। तहरीर के आधार पर कार्रवाई की जा रही है।

# उद्यम के लिए भूमि उपलब्ध कराने के लिए 28 ने किया आवेदन

महराजगंज। भारत–नेपाल सीमा पर स्थित झुलनीपुर में सूक्ष्म व लघु उद्यम के लिए भूमि उपलब्ध कराने के लिए 28 लोगों ने आवेदन किया है। उद्यम प्रोत्साहन केंद्र की ओर से प्रशासन से भूमि मांगी गई है। प्रशासन की ओर से भूमि मिलते ही आवंटन संबंधी प्रक्रिया को पूरा कराने का कार्य होगा। भारत–नेपाल सीमा पर झुलनीपुर में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जाने की योजना है। तहसील प्रशासन ने वहां पर 40 हेक्टेयर भूमि होने की बात भी कही है। इसे उद्योग विभाग के नाम दर्ज होना है। प्रशासनिक स्तर से इस दिशा में पहल शुरू कर दी गई है। उद्योग विभाग के नाम भूमि होने के बाद इच्छुक 28 आवेदकों को उनकी आवश्यकता को देखते हुए भूमि का आवंटन किया जाएगा। भूमि मिलने से वे जहां उद्यम स्थापित करेंगे, वहीं, स्थानीय लोगों को स्वरोजगार उपलब्धा कराने में भी सहूलियत होगी। इन 28 लोगों की ओर से मांगी जा रही भूमिः झुलनीपुर में जिन 28 लोगों की ओर से भूमि की मांग की जा रही है, उनमें शत्रुघ्न गुप्ता राइस मिल, अनुमेहा बकरी पालन, ब्रह्मानंद पीवीसी पाइप, गौरव दूबे, जितेंद्र जायसवाल व विनोद यादव रिंग निर्माण, रामदुलारे गत्ता फैक्ट्री लगाना चाहते हैं। वहीं, कन्हैया लाल अग्रवाल विभिन्न प्रकार के चने से जुड़े उत्पाद, रंजीत सिंह पेंट पॉलिश, सुमन दफ्ती निर्माण, शबाब अहमद ईंट निर्माण, विजय जायसवाल प्लाईवुड उद्योग स्थापित करना चाहते हैं। आरती देवी स्लीपर शीट, अष्टभुजा जायसवाल स्टील फेब्रिकेशन, आदित्य मिश्रा ब्रिक्स होलो, रामेश्वर पांडेय सीमेंट ब्रिक्स, पंकज पांडेय ह्यूम पाइप, मनोज मोदी आटा व मैदा उद्योग, चंद्रप्रकाश गुप्ता बॉक्स निर्माण करेंगे। प्रकाश सिंह फर्नीचर, गणेश प्रसाद मिनरेल वाटर प्लांट, ललिता अग्रहरी फूड सेक्टर, अजय कुमार फुट वियर, अनिल कुमार बेकरी उत्पाद, आदित्य प्रकाश प्लास्टिक कुर्सी, राजेंद्र बायोकोल प्लांट व सुमन गुप्ता फोर्टिफाइड चावल से जुड़ा कार्य करने की इच्छुक हैं।

# आपरेशन क्लीन थाना के अंतर्गत खोड़ारे थाना मे 11 सीज दोपहिया वाहनों का हुवा नीलामी

दैनिक बुद्ध का सन्देश

मनकापुर गोण्डा। ऑपरेशन क्लीन थाना के अन्तर्गत निस्तारण कराये

गये वाहनो के सम्बन्ध में थाना खोडारे जनपद गोण्डा दिनांक 28.03.2023 थाना खोड़ारे में धारा 207 एमबी एक्ट के अन्तर्गत सीजशुदा 11 अदद मोटरसाईकिलो के निस्तारण के सम्बन्ध में पुलिस अधीक्षक महोदय जनपद गोण्डा के ऑपरेशन क्लीन थाना के सम्बन्ध में चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत वाहनो के निस्तारण के सम्बन्ध में समस्त प्रभारी निरीक्षकध्थानाध्यक्षों को निर्देशित किया गया था। उक्त निर्देशन के अनुक्रम में अपर पुलिस अधीक्षक महोदय जनपद गोण्डा के कुशल निर्देशन व क्षेत्राधिकारी महोदय मनकापुर के कुशल पर्यवेक्षण तथा प्रभारी निरीक्षक थाना खोडारे के नेतृत्व में मा0 न्यायालय से सीजेएम गोण्डा महोदय से आदेश प्राप्त कर आदेश के अनुपालन में उपजिलाधिकारी महोदय मनकापुर द्वारा नीलामी हेतु नायब तहसीलदार अमित कुमार को नीलामी हेतु अधिकारी नामित किया था आदेश के अनुक्रम में थाना खोड़ारे के अन्तर्गत धारा 207 एमबी एक्ट के अन्तर्गत 11 अदद मोटरसाईकिलो का निस्तारण कराया गया। इस अवसर पर .नायब तहसीलदार मनकापुर अमित कुमार प्रभारी निरीक्षक खोड़ारे सुरेश कुमार वर्मा, उ0नि0 प्रेमानन्द,.उ0नि0 रामकेश, चौधरी,हे0मो0 जयप्रकाश यादव हे0का0 अजीत सिंह सहितपुलिस कर्मी मौजूद रहे।

# कुशीनगर आरबीआई का कैशपार माइक्रो द्वारा वितीय जागरुकता अभियान

दैनिक बुद्ध का सन्देश

कुशीनगर। कुबेरस्थान कैशपार माइक्रो क्रेडिट द्वारा सदस्याओं को

वित्तीय जागरूकता तथा उनके हितों को ध्यान में रखते हुवे आर बी आई द्वारा जारी नए दिशानिर्देशों के बारे में जानकारी देने के लिए कार्यशाला का आयोजन राजेन्द्र कुमार गुप्ता के तत्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आज दिनांक 25–3–23 कैशपार माइक्रो क्रेडिट संस्था द्वारा अपनी। सदस्याओ को वित्तीय जागरूकता तथा उनके हितों को ध्यान में रखते हुवे आर बी आई द्वारा जारी नए दिशानिर्देशों के बारे में जानकारी देने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया है।कैशपार हमेशा से ही गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाली सदस्याओ को वित्तीय सहायता साथ स्वास्थ्य एवम शिक्षा की सुबिधाए भी प्रधान करती है सदस्यों मि आर्थिक स्थिति को सुधारने के साथ साथ वह अपने परिवार की बीमारी और बच्चो के शिक्षा पर ध्यान दे सके और अपने जीवनस्तर को ऊपर उठा सके । कैशपार प्रति वर्ष ऐसे कार्यशाला का आयोजन करता है इस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में थानाध्यक्ष कुबेरस्थान राघवेंद्र सिंह विशिष्ट अतिथि प्रभारी चिकित्साधिकारी रजनीश श्रीवास्तव भी सदस्याओं को किए और साथ ही साथ , डी डी ओ राम बड़ाई तिवारी, ट्रेनर विनोद कुशवाहा, एरिया रिस्क ऑफिसर राम निवास यादव, क्लस्टर हेड राजीव पांडेय, शाखा प्रबंधक राजेन्द्र कुमार गुप्ता ,सतेंद्र प्रसाद, अनिल कुमार, सवीना अख्तर स्टाफ मिनसकर, राजीव,राजनाथ,तसरीफुन, अमृता, राणा प्रताप, अब्दुल नवी कुरैशी, मनीषा, राहुल ,इस आयोजन में लगभग 150 से अधिक लोग उपस्थित थे और इस आयोजन में सभी सदस्याओं ने भी बराबर का भाग लिया कैशपार माइक्रो क्रेडिट ने इस आयोजन में सभी सदस्याओं के जलपान और आने जाने का भी व्यवस्था किया था इस आयोजन को सफल करने में सभी स्टाफों का बहुमूल्य सहयोग अत्यंत सराहनीय था।

# नवरात्रि के पावन अवसर पर सोनबरसा में आयोजित हुई चित्रकला प्रतियोगिता

## बच्चों ने विभिन्न प्रकार की सीनरी व देवी–देवताओं के चित्र बना लोगों को किया आकर्षित

दैनिक बुद्ध का सन्देश

मोतीगंज गोंडा ! नवरात्रि के पावन अवसर पर मंगलवार को शिक्षा क्षेत्र

मनकापुर के कम्पोजिट स्कूल सोनबरसा बक्सर आज्ञाराम में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के लगभग चालीस छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया। जिसमें बच्चों ने विभिन्न प्रकार की सीनरी के साथ ही देवी–देवताओं जैसे श्री कृष्ण, हनुमान जी, सरस्वती जी, पार्वती जी, शंकर जी आदि के चित्र बनाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। प्रतियोगिता में काजल, मुनिया तिवारी, साकिरा बानो, साबिरा, अंशिका, संगीता, शिवानी , महिमा, सुषमा, अर्चना, संजू, रिया शर्मा, चांदनी, लक्ष्मी, अनामिका, पूनम, ताज मोहम्मद, हिमांशी, अमन, शिवम, केशमी, अंशिका मौर्य, हाजिरा बानो, ज्योति, आरती आदि बच्चों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर शिक्षक बलजीत सिंह कनौजिया, राम अनुज, शताब्दी वर्मा, सुरेश कुमार, देवेंद्र प्रताप, अमर ज्योति शर्मा, चित्रावती मौर्य, पूनम यादव, अनुराधा मिश्रा, देवेंद्र प्रताप आदि उपस्थित रहे।

# दुष्कर्म के दोषी विजेंदर विश्वकर्मा को उम्रकैद

- एक लाख रूपये अर्थदंड ना देने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद
- 9 वर्ष पूर्व 16 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ हुए दुष्कर्म का मामला
- अर्थदंड की समूची धनराशि एक लाख रूपये पीड़िता को मिलेगी

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। 9 वर्ष पूर्व 16 वर्षीय नाबालिग लड़की को बहला फुसलाकर भगाकर ले जाकर उसके साथ दुष्कर्म करने के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश,विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट सोनभद्र निहारिका चौहान की अदालत ने मंगलवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी विजेंदर विश्वकर्मा को उम्रकैद एवं एक लाख रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। अर्थदंड की समूची धनराशि एक लाख रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक राबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने 16 जनवरी 2014 को राबर्ट्सगंज कोतवाली में दी तहरीर में अवगत कराया था की उसकी 16 वर्षीय नाबालिग बेटी एक जनवरी 2014 को सुबह 10 बजे बाजार के लिए निकली थी तो घर वापस नहीं लौटी। बेटी की हर संभावित जगहों पर तलाश किया, किंतु उसका कहीं पता नहीं चला। 15 जनवरी 2014 को बेटी घर आई तो बताया कि उसे राबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र के मझुई गांव निवासी विजेंदर विश्वकर्मा पुत्र मोहन विश्वकर्मा बहला फुसलाकर भगा ले गया था। इस तहरीर पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया। विवेचक ने पर्याप्त सबूत मिलने पर न्यायालय में विजेंदर विश्वकर्मा पुत्र मोहन विश्वकर्मा निवासी मझुई, थाना राबर्ट्सगंज, जिला सोनभद्र के विरुद्ध चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी विजेंदर विश्वकर्मा को उम्रकैद एवं एक लाख रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं अर्थदंड की समूची धनराशि एक लाख रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष की तरफ से सरकारी वकील दिनेश कुमार अग्रहरी, सत्य प्रकाश त्रिपाठी एवं नीरज कुमार सिंह ने बहस की।

## पाक्सो एक्टः दोषी अमरेश को 10 वर्ष की कैद

सोनभद्र। साढ़े आठ वर्ष पूर्व 17 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ हुए दुष्कर्म के मामले में अपर सत्र न्यायाधीशध विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट सोनभद्र निहारिका चौहान की अदालत ने मंगलवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी अमरेश कुमार को 10 वर्ष की कैद व 50 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 5 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं अर्थदंड की समूची धनराशि 50 हजार रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक म्योरपुर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने 18 मई 2014 को म्योरपुर थाने में दी तहरीर में अवगत कराया था कि 19 अप्रैल 2014 को उसकी 17 वर्षीय नाबालिग बेटी को शादी का झांसा देकर म्योरपुर थाना क्षेत्र के बाराडाड गांव निवासी अमरेश कुमार पुत्र मनिजर धोबी भगा कर ले गया। बेटी की कई जगह खोजबीन किया, लेकिन कहीं पता नहीं चला। इस तहरीर पर पुलिस ने एफ आई आर दर्ज कर मामले की विवेचना शुरू कर दिया। विवेचना के दौरान 24 मई 2014 को पीड़ित बेटी को बरामद कर लिया और अभियुक्त अमरेश को गिरफतार कर लिया। इसी मामले में अदालत ने सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी अमरेश कुमार को उपरोक्त सजा सुनाई।

# श्री राम दरबार शोभा यात्रा को लेकर बैठक संपन्न

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। नगर के मध्य स्थित रामलीला मैदान के हॉल में सोमवार को देर शाम चली श्री राम दरबार शोभा यात्रा की तैयारी को लेकर अति आवश्यक बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री राम दरबार अखाड़ा समिति के अध्यक्ष धर्मवीर तिवारी ने किया।व संचालन श्री राम दरबार अखाड़ा समिति के महामंत्री प्रमोद गुप्ता ने किया। जिसमें ध र्मवीर तिवारी ने कहा की रामनवमी वाले दिन दोपहर 12रू00 बजे भगवान राम का सिंगार और जन्मोत्सव होगा। और उसके बाद किन्नर समुदाय द्वारा सोहर गीत प्रस्तुत किया जाएगा। शोभायात्रा अपने समय से राम जानकी मंदिर से मेन चौक होते हुए धर्मशाला चौक से चंडी होटल चंडी होटल से मेन चौक मेन चौक से बढ़ौली चौराहे से कचहरी होते हुए महिला थाना महिला थाना से राम जानकी मंदिर पर समापन किया जाएगा।यात्रा की तैयारी के लिए आप सभी वार्ड संयोजक प्रभारी अपने अपने वार्ड से हजारों की संख्या में निकले और समय से राम जानकी मंदिर पर इकट्ठा हो। शोभा यात्रा को भव्य स्वरूप मिले शोभायात्रा में मनमोहक झांकियां व सांस्कृतिक कार्यक्रम भगवान श्री राम दरबार की दिव्य झांकी प्रस्तुत की जाएगी। वह हजारों की संख्या

में राम भक्त श्रद्धालु शामिल होंगे। प्रमोद गुप्ता ने कहा कि कार्यक्रम की व्यवस्था व समय और सामग्री पर चर्चा किया। और बताया कि सभी राम भक्त 30 मार्च समय दोपहर 2.00 से रामनवमी पर शोभा यात्रा राम जानकी मंदिर विजयगढ़ वाटिका से निकाली जाएगी। जिसके लिए नगर के प्रत्येक मकानों में ध्वज लग चुके हैं। और जहां नहीं लगे हैं वहां लगाए जा रहे हैं। नगर की साज–सज्जा के लिए यात्रा के मुख्य मार्गों पर झंडी व ध्वज से सजाया जा रहा ह। अखाड़ा परिषद के संरक्षक श्रवण व जितेंद्र ने कहा कि देश में सदियों से भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के पर्व राम नवमी का उत्सव मनाया जाता है। मैं भी बचपन से हर साल रामनवमी के दिन घर में पूजा होते देखता रहा हूँ। संयोग से चौत्र के नवरात्रि की नवमी तिथि के दिन ही रामनवमी का पर्व होता है ,इसलिए पहले देवी पूजा और कन्या भोज के साथ हवन होता है फिर दोपहर 12 बजे राम जन्मोत्सव मनाने की परंपरा है। जितेंद्र सिंह ने कहा की इस वर्ष होने वाली यात्रा में भारी संख्या में भक्त अवश्य शामिल होंगे। अखाड़ा परिषद के आनंद मिश्रा आलोक सिंह ने कहां इस बार 30 मार्च दोपहर 12 बजे श्रीराम जन्मोत्सव की आरती के बाद करीब दो बजे यात्रा सोनभद्र नगर के मुख्य मार्गो से होते हुए वापस समापन श्री राम जानकी मंदिर परिसर में होगा ।अखाड़ा परिषद के कृष्ण मुरारी गुप्ता व संगम गुप्ता ने कहा कि यात्रा के स्वागत के लिए नगर वासियों द्वारा जगह–जगह गेट बनाए जाएंगे। तथा राम भक्तों द्वारा जगह जगह पुष्प वर्षा इत्यादि चीजों से श्री राम दरबार शोभा यात्रा का स्वागत किया जाएगा। सुरक्षा व्यवस्था की दृष्टि से मनीष अग्रहरि ने बताया कि यात्रा में आम जनमानस की सुरक्षा के लिए अखाड़ा परिषद की तरफ से 200 वालंटियर बनाए जाएंगे। जिससे यात्रा में लोगों को सुरक्षा प्रदान हो सके। अखाड़ा परिषद के सोशल मीडिया प्रभारी श्याम उमर ने बताया कि सोशल मीडिया प्रिंट मीडिया के फोन के माध्यम से राम भक्तों तक यात्रा की सूचना पहुंचाई जा रही है।बैठक में मुख्य रूप से पदाधिकारी व गणमान्य लोग मौजूद रहे।

# रिचार्ज फीट निर्माण में लापरवाही पर 6 एडीओ पंचायत को प्रतिकूल प्रविष्टि

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। जनपद में पेयजल समस्या के निस्तारण के लिए चलाए जा रहे डीप बोरवेल रिचार्ज पीट निर्माण की समीक्षा आज कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह और मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार ने सभी सचिवों, सहायक विकास अधिकारी पंचायत एवं खंड विकास अधिकारियों से की जिसमें प्रथम चरण में 1906 रिचार्ज पिट का लक्ष्य जनपद का निर्धारित किया गया है। विकासखंड कोन 135 रिचार्ज पीठ का लक्ष्य निर्धारित किया गया था इसमें अभी तक मात्र 18 पर कार्य शुरू हो पाया है, इसी प्रकार विकास खंड चतरा में 152 के सापेक्ष 46 रिचार्ज पीठ पर कार्य शुरू हुआ है, विकास खंड नगवा 116 के सापेक्ष 34 पर कार्य शुरू हुआ है, विकास खंड रावटसगंज में 291 के सापेक्ष 90 रिचार्ज पीट पर कार्य शुरू हुआ है विकास खंड करमा में 188 के सापेक्ष 59 एवं विकास खंड म्योरपुर में 301 के सापेक्ष 104 पर कार्य शुरू हुआ है, बभनी विकास खंड में 135 के सापेक्ष 47 चोपन विकास खंड में 197 के सापेक्ष 84, दुद्धी विकास खंड में 115 51, पर कार्य प्रारंभ पाया गया। जिलाधिकारी के निर्देश के वावजूद डीप बोर वेल रिचार्ज पीट में लापरवाही पर कड़ी नाराजगी व्यक्त की गई। डिफाल्टर 6 विकास खण्ड कोन, चतरा, नगवा, राबर्ट्सगंज, नगवा और म्योरपुर के एडीओ पंचायत को प्रतिकूल प्रविष्टि दिए जाने का निर्देश दिया गया। रिचार्ज पीट निर्माण के लिए सभी सचिव को निर्देशित किया गया कि रिचार्ज पीट जनपद के लिए अत्यंत जरूरी है, आज हम भूगर्भ जल से जितना पानी का दोहन कर रहे हैं उतना हमें भूगर्भ जल को रिचार्ज किया जाना भी है।

सोनभद्र में पानी की समस्या का एकमात्र हल भूगर्भ जल को रिचार्ज कर ही किया जा सकता है। इसलिए सभी सचिव और एडीओ पंचायत इस कार्य में किसी प्रकार की शिथिलता कदापि न बरतें एक सप्ताह के अंदर दिए गए लक्ष्य को पूर्ण करते हुए रिपोर्ट एवं डिजिटल डायरी उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। ग्राम पंचायतों में शौचालय निर्माण और द्वितीय किस्त जारी किए जाने की समीक्षा मुख्य विकास अधिकारी ने सचिव वार की इसमें विकासखंड चतरा के सचिव राजेश कुमार यादव के ग्राम पंचायत में 18 लाभार्थियों की अपात्र लाभार्थी को डिमांड प्रेषित की गई थी, जिसका अपर जिला पंचायत अधिकारी के सत्यापन में वह लाभार्थी अपात्र पाए गए जिस पर सचिव को निलंबित करने का आदेश दिया गया साथ ही सहायक विकास अधिकारी पंचायत चतरा को प्रतिकूल प्रविष्टि जारी करने का निर्देश दिया गया। मुख्य विकास अधिकारी सौरभ गंगवार ने कायाकल्प, दिव्यांग शौचालय के लिए सभी ब्लॉक में 25 का निर्माण कराएं जाने का निर्देश दिया। आयुष्मान कार्ड ओडीएफ फेज 2 के अंतर्गत चयनित गांव की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए गए तथा सभी को निर्देशित किए की प्रति सप्ताह होने वाली समीक्षा बैठक में प्रगति होनी चाहिए।

जिस ग्राम पंचायत की प्रगति नहीं पाई जाएगी उसके खिलाफ तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। ग्राम पंचायतों में सामुदायिक शौचालय के संचालन का भी निर्देश दिया गया सामुदायिक शौचालय सुबह 5:00 से 10:00 तक एवं साईं 4:00 से 8:00 तक प्रत्येक दशा में खुले एवं केयरटेकर के माध यम से उसका संचालन किया जाए यह सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिया गया बैठक में दिया गया। बैठक में जनपद के समस्त ग्राम पंचायत सचिव, समस्त सहायक विकास अधि ाकारी पंचायत, डिस्टिक कंसलटेंट, जिला पंचायत अधि ाकारी विशाल सिंह जिला विकास अधिकारी शेषनाथ चौहान एवं मुख्य विकास अधिकारी सौरव गंगवार उपस्थित रहे।

# जिला पोषण कन्वर्जेन्स समिति के कार्यों की जिलाधिकारी ने की समीक्षा

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। पोषाहार वितरण के पश्चात पोषण टैकर ऐप पर डाटा फीडिंग की प्रगति धीमी पाये जाने पर जिलाधिकारी ने समस्त बाल विकास परियोजना अधिकारी से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के दिये निर्देश जिलाधि ाकारी चन्द्र विजय सिंह ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में ''पोषण अभियान'' की जनपद स्तरीय पोषण कन्वर्जेन्स सम्बन्ध ी बैठक की, बैठक के दौरान उन्होंने कहा कि जिले के विकास व स्वस्थ्य समाज के लिए बच्चों का स्वस्थ्य होना जरूरी है, कुपोषण मुक्त गांव की संकल्पना के साथ ही अधिकारियों को गांव के हिसाब से कार्य आवंटित किये गये हैं, उन्हेंने कहा कि गांवों को शत–प्रतिशत कुपोषण मुक्त बनाये जाने हेतु प्रभावी कदम उठायें जाये, इस दौरान जिलाधिकारी ने पोषाहार वितरण के पश्चात पोषण टैकर ऐप पर फीडिंग की प्रगति की समीक्षा की, तो पोषण टैकर ऐप पर फरवरी,2023 माह की फीडिंग 26 प्रतिशत पायी

गयी, जिस पर जिलाधिकारी ने समस्त बाल विकास परियोजना अधिकारी से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश जिला कार्यक्रम अधिकारी को दियें और कहा कि पोषाहार वितरण के बाद पोषक टैकर ऐप पर फीडिंग के कार्य में तेजी लायी जाये। इसी प्रकार से जिलाधिकारी ने बी0एच0एन0डी0 की बैठक रोस्टर सेशन के अनुसार न होने पर व पोषण अभियान के तहत किये जा रहे कार्यों की मानीटरिंग बेहतर ढंग से न किये जाने पर जिला कार्यक्रम अधिकारी के वेतन भुगतान पर रोक लगाने के निर्देश दिये हैं, इस दौरान जिलाधिकारी ने उपस्थित बाल विकास परियोजना अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों पर पोषण अभियान के तहत कराये जा रहे कार्यों की बेहतर ढंग से मानीटरिंग करना सुनिश्चित करें, जिन बाल विकास परियोजना अधि ाकारियों द्वारा पोषण अभियान के तहत मानीटरिंग व निरीक्षण के कार्यों में शिथिलता बरती जायेगी, उनकी जिम्मेदारी तय करते हुए उनके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। उन्होंने कहा कि सैम–मैम बच्चों समय पोषाहार व दवाएं उपलब्ध करायी जाये और उनके स्वास्थ्य का समय–समय पर परीक्षण भी कराया जाये, जिससे कि वह जल्द से जल्द स्वास्थ्य हो सके।

## जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

| | |
|---|---|
| जिलाधिकारी | मो0:– 9454417530 |
| मुख्य विकास अधिकारी | मो0:– 9454464749 |
| एस डीएम नौगढ़ | मो0:– 9454415936 |
| एस डीएम बांसी | मो0:– 9454415937 |
| एस डीएम डुमरियागंज | मो0:– 9454415939 |
| एस डीएम इटवा | मो0:– 9454415939 |
| एस डीएम शोहरतगढ़ | मो0:– 9454415940 |
| पुलिस अधीक्षक | मो0:– 9454400305 |
| थाना मोहाना | मो0:– 9454404239 |
| थाना जोगिया उदयपुर | मो0:– 9454404235 |
| थाना गोलौरा | मो0:– 9454404233 |
| थाना पथरा बाजार | मो0:– 9454404240 |
| थाना त्रिलोकपुर | मो0:– 9454404243 |
| थाना उसका बाजार | मो0:– 9454404244 |
| थाना शोहरतगढ़ | मो0:– 9454404241 |
| थाना खेसरहा | मो0:– 9454404236 |
| थाना इटवा | मो0:– 9454404234 |
| थाना चिल्हिया | मो0:– 9454404229 |
| थाना ढेबरूआ | मो0:– 9454404230 |
| थाना भवानीगंज | मो0:– 9454404228 |
| थाना मिश्रौलिया | मो0:– 9454404238 |
| थाना सि0नगर | मो0:– 9454404242 |
| थाना डुमरियागंज | मो0:– 9454404232 |
| थाना लोटन | मो0:– 9454404237 |
| महिला थाना | मो0:– 9454404891 |

# मोटराइज्ड ट्राई साइकिल वितरण शिविर का आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गौतमबुद्धनगर।दिव्यांगजनों के कल्याणार्थ प्रदेश सरकार के द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित, अभियान चलाकर पात्रों तक लाभ पहुंचाने की कार्रवाई करें अधिकारीगणः उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की मंशा के अनुरूप एवं जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा के नेतृत्व में जनपद में दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर, सशक्त बनाने के लिए एवं दिव्यांगजनों के हितार्थ शासन की योजनायों का लाभ सरलता से उपलब्ध ा कराने के उद्देश्य से आज आर्मी इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन ग्रेटर नोएडा में पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग उत्तर प्रदेश के माननीय मंत्री नरेंद्र कश्यप जी ने विधिवत रूप से दीप प्रज्वलित कर मोटराइज्ड ट्राई साइकिल वितरण शिविर का शुभारंभ किया। मुख्य विकास अधिकारी तेज प्रताप मिश्र द्वारा पुष्पगुच्छ देकर मुख्य अतिथि माननीय मंत्री नरेंद्र कश्यप जी का स्वागत किया गया। मा0 मंत्री जी के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अपने उद्गार व्यक्त करते हुये मोटराइज्ड ट्राईसाईकिल प्राप्त 59 दिव्यांजनों को बधाई दी गयी। उन्होंने कहा कि शासन द्वारा प्रदेश के लगभग 7. 5 लाख दिव्यांगजनों को 42 हजार रूपये की कीमत की मोटराइज्ड ट्राईसाईकिल के लिए 32 करोड़ 50 हजार की व्यवस्था करके दिव्यांगजनों के जीवन में नयी रोशनी की पहल की है एवं 11 लाख दिव्यांगजन 1000 रूपये भरण पोषण राशि प्राप्त कर रहे है। माननीय मुख्यमंत्री जी ने दिव्यांगजनों के भरण पोषण की 300 रू की राशि को 1000 रू प्रतिमाह कर दिया है। यह काम यही रूकने वाला नही है, हम इस राशि को और आगे बढ़ाने का काम करेगें। माननीय मंत्री जी ने कहा कि हमारी सरकार लोगों के कल्याण और लोकहित के लिए तत्पर है ऐसी सरकार ने विकलांगता को दिव्यांगता में परिवर्तित करने का प्रयास किया। मा0 मंत्री जी ने विभाग द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के बारे में दिव्यांग जनों को बहुत ही सरलता के साथ अवगत कराते हुए कहा कि लाभार्थियों को लाभ दिलाने में आ रही समस्याओं को हटाकर योजनाओं तक पहुँच बनाने के लिए और सरल बनाया जा रहा है। हमारी सरकार दिव्यांग बच्चों की शिक्षा को बढ़ाने के कृत संकल्पित है। दिव्यांगजनों के उच्च शिक्षा के लिए डॉ० शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुर्नवास विश्वविद्यालय एवं जगद्गुरू रामभद्राचार्य विश्व विद्यालय चित्रकूट संचालित है। दिव्यांगजनों के जीवन की खुशहाली के लिए हमारा विभाग तत्पर है। हम अपनी योजनाओं का प्रचार–प्रसार भी कर रहे है। जी 20 सम्मेलन से आज दुनिया का ध्यान भारत की ओर है और भारत का ध्यान उत्तर प्रदेश की ओर है। मा० मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हमारा प्रदेश देश का सर्वश्रेष्ठ प्रदेश बनने की ओर अग्रसर। इस महत्वपर्ण कार्यक्रम में माननीय विध ाायक दादरी तेजपाल नागर, उपनिदेशक दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग मेरठ मण्डल प्रीतीलता राजपूत, जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी आशीष कुमार सिह एवं जिला पिछडावर्ग कल्याण अधिकारी लवेश कुमार सिसोदिया, जिला प्रोबेशन अधिकारी अतुल कुमार सोनी, जिला सांख्यिकी अधिकारी हेंमत कुमार एवं आर्मी इंस्टिट्यूट ऑफ एजुकेशन विश्वविद्यालय प्रधानाचार्य अभिलाषा गौतम उपस्थित रहे। राकेश चौहान जिला सूचना अधिकारी गौतम बुद्ध नगर।

बुद्ध का संदेश

(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458

संस्थापक

स्व. के.सी. शर्मा

सम्पादक

राजेश कुमार शर्मा

9415163471, 9453824459

दैनिक बुद्ध का संदेश

9795951917,9415163471

@budhakasandesh

budhakasandeshnews@gmail.com

www.budhakasandesh.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

# अपने नए म्यूजिक वीडियो में बेमिसाल लग रही हैं रमनदीप कौर

अख लाल, बेवफा, बीकानेरी माल, दिल जानिया, इश्क तुम्हारा, नई भूलना तेरा प्यार जैसे सक्सेसफुल म्यूजिक वीडियो की एक लड़ी जैसे लगा देने के बाद, अभिनेत्री और मॉडल रमनदीप कौर गायक संजीव के साथ बेमिसाल इस म्यूजिक वीडियो में अपने ग्लैमरस और शानदार लुक के साथ वापस आ गई हैं। .

बेमिसाल गाना हर उस लड़के या पुरुष के लिए है जो अपनी गर्लफ्रेंड या महिला की खूबसूरती की तारीफ करना चाहता है। यह गाना संदीप निज्जर के साथ रमनदीप कौर का रीयूनियन है। बेमिसाल का निर्देशन संदीप निज्जर ने किया है। हम पहले एक कैनेडियन डायरेक्टर के लिए मेरे दो म्यूजिक वीडियो की शूट के दौरान सेट पर मिले थे।

संदीप ने मुझे मैसेज किया कि चलो मिलते हैं और एक बार फिर साथ में कुछ काम करते हैं। संदीप और उनकी टीम के साथ शूटिंग करना बहुत ही प्लीसेन्ट और मजेदार अनुभव था। जैसा कि हम एक–दूसरे को पहले से जानते थे, हमें उससे अपना सर्वश्रेष्ठ काम करने में मदद मिली, रमनदीप ने बेमिसाल पर काम करने के बारे में बात करते हुए कहा।

एक अभिनेत्री के रूप में, रमनदीप कौर ने डायरेक्टर आरके मालिनेनी की कॉमेडी फिल्म कॉलीफ्लॉवर के साथ टॉलीवुड में डेब्यू कर चुकी है, जिसमें उन्होंने प्रसिद्ध कॉमेडियन पोसानी कृष्णा मुरली और सम्पूर्णेश बाबू जैसे कलाकारों के साथ काम किया है। अपनी आगामी परियोजनाओं के बारे में बात करते हुए, रमनदीप कौर ने कहा, अहिंमसा मेरी आगामी तेलुगु फिल्म है जो 7 अप्रैल 2023 को रिलीज हो रही है।

डायरेक्टर तेजा द्वारा निर्देशित इस फिल्म में गीतिका, रजत बेदी, चंद्रमौली बिंदू,अभिराम दग्गुबाती, कमल कामराजू व अन्य सितारों के साथ मैं स्क्रीन स्पेस साझा कर रही हूं। । इस आगामी फिल्म के साथ, मैं अपने फैन्स को सरप्राइज करने जा रही हूं और वे निश्चित रूप से एक अभिनेत्री के रूप में मेरे नए अवतार और क्षमता की सराहना करेंगे।

एकजुट थिएटर ग्रुप का सक्रिय हिस्सा रही रमनदीप कौर, पंजाबी संगीत उद्योग में एक लोकप्रिय चेहरा रही हैं। उन्होंने जी म्यूजिक के लिए म्यूजिक वीडियो भी किया है। इसके अलावा, उन्होंने अफसाना खान के ना मार म्यूजिक वीडियो में श्रद्धा आर्य और करण कुंद्रा के साथ स्क्रीन साझा की है।

# कहीं आप भी तो नहीं सर धोने के बाद तौलिये से बाँध लेती है बाल तो हो जाइए सावधान

आज के जमाने में बालों की समस्या कॉमन हो चुके है। हर आयु के लोग बालों की परेशानी को झेलना पड़ जाता है। मेल और

फीमेल्स दोनों को अपने बालों को हेल्दी रखने के लिए काफी मशक्कत करना पड़ जाता है। आमतौर पर महिलाएं बड़े बाल रखती हैं और उन्हें बालों की अधिक केयर करने की आवश्यकता होती है। कई बार आपने देखा होगा कि लोग सिर धोने के उपरांत बालों पर तौलिया लपेट लेते हैं। हमेशा फीमेल्स ऐसा करती हैं। उन्हें लगता है कि इससे उनके बाल जल्दी सूख सकते है। हालांकि ऐसा करने से बचना चाहिए। गीले बालों पर तौलिया लपेटने के कई नुकसान होते हैं।

विशेषज्ञ कहते हैं कि सिर धोने के उपरांत बालों पर तौलिया लपेटना हानिकारक साबित हो सकता है। ऐसा करने से बाल लंबे वक्त तक गीले रहते हैं और बालों को काफी हानि भी हो सकती है। इसके बजाय फीमेल्स बाल धोने के उपरांत हीट फंक्शन ऑफ करके हेयर ड्रायर उपयोग कर सकती हैं। जिससे बाल जल्दी सूख जाएंगे और स्कैल्प को भी नुकसान नहीं हो सकता। हेयर ड्रायर का इस्तेमाल सही तरीके से करना चाहिए और सप्ताह में 2 से 3 बार ही शैंपू से हेयर वॉश करना चाहिए। लंबे बाल ज्यादा धोने से कमजोर होने वाला है।

बाल धोने के बाद तौलिया लपेटने के 5 नुकसान–

'गीले बालों पर तौलिया लपेटने से सिर काफी देर तक गीला रहता है और इससे डैंड्रफ की परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है।

'सिर धोने के उपरांत तौलिया लपेटने से स्कैल्प में फंगल इंफेक्शन होने का डर बढ़ जाता है, जो बालों के लिए हानिकारक है।

'जो लोग हेयरफॉल की परेशानी से जूझ रहे हैं, उनकी समस्या गीले बालों पर तौलिया लपेटने से बढ़ जाती है।

'गीले बालों पर तौलिया टाइट बांधने से बालों की जड़ें कमजोर होने लगी जाती है और बाल तेजी से टूटने लगते हैं।

'ऐसा करने से बाल तेजी से ड्राई होने लगते हैं और बालों की नेचुरल शाइनिंग यानी चमक भी पूरी तरह से चली जाती है।

# ऋतिक ने गर्लफ्रेंड सबा के पोस्ट पर किया कमेंट

बॉलीवुड अभिनेता ऋतिक रोशन ने अपनी एक्ट्रेस–सिंगर गर्लफ्रेंड सबा आजाद की साड़ी पहने फोटो पर कमेंट की है। सबा

ने इंस्टाग्राम पर मनीष मल्होत्रा की शिमरी ब्लू और गोल्डन साड़ी में अपनी कुछ फोटो शेयर की और कैप्शन में लिखारू मरमेड. बट मेक इट डिस्को इस पोस्ट पर ऋतिक ने कमेंट किखारू मैं तुमसे मिलता हूं, इसके साथ ही हार्ट इमोजी का भी इस्तेमाल किया। यह कपल कई महीनों से एक–दूसरे को डेट कर रहे हैं और अक्सर फिल्म पार्टियों और इवेंट्स में साथ में देखे जाते हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो ऋतिक अगली बार फाइटर में नजर आएंगे। इसमें दीपिका पादुकोण और अनिल कपूर भी हैं। सबा रॉकेट बॉयज सीजन 2 में नजर आ रही हैं।

# बंगाली फिल्म चेंगिज हिंदी में भी होगी रिलीज, ऐसा करने वाली पहली फिल्म बनेगी

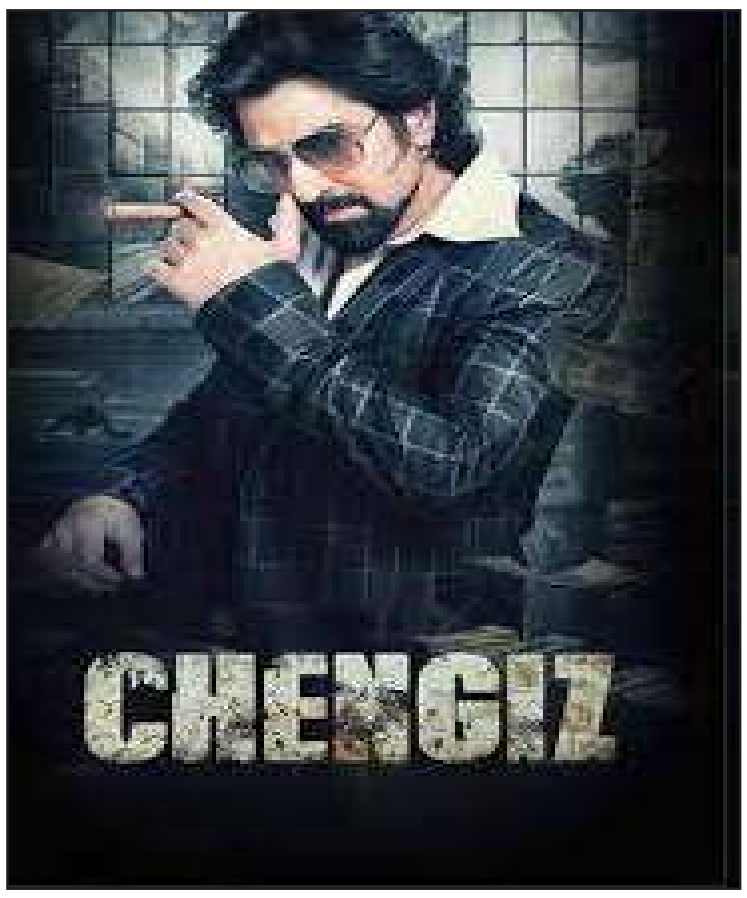


बंगाली अभिनेता जीत फिल्म चेंगिज को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। यह फिल्म ईद के मौके पर 21 अप्रैल को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। दिलचस्प बात यह है कि चेंगिज बंगला समेत हिंदी भाषा में भी रिलीज होगी। ऐसे में यह पहली बंगाली फिल्म होगी, जिसे साथ में हिंदी में भी रिलीज किया जाएगा। निर्माताओं ने मंगलवार को चेंगिज का नया पोस्टर जारी किया है, जिसमें जीत का एक अलग अंदाज देखने को मिल रहा है। फिल्म में नजर आएंगे ये कलाकार : इस फिल्म को जीत फिल्म वर्क्स एसोसिएशन और एए फिल्म्स के बैनर तले बनाया गया है। यह फिल्म गोपाल मदनानी और अमित जुमरानी द्वारा निर्मित है, जबकि राजेश गांगुली ने इसका निर्देशन किया है। चेंगिज में शताफ फिगार, सुष्मिता चटर्जी और रोहित बोस रॉय भी प्रमुख भूमिका में नजर आने वाले हैं। यह फिल्म 1970 से लेकर 1990 के दशक मध्य तक कोलकाता के अंडरवर्ल्ड पर आधारित होगी। ऐसे में इस फिल्म का दर्शक ब्रेसबी से इंतजार कर रहे हैं। श्साथीच्य, श्नाटेर गुरुच्य, श्संगीच्य, श्बंधनच्य, श्युद्धोच्य, श्जोरच्य, श्वांटेड्च्य, श्दुई पृथ्वीच्य, श्नट गुरुच्य, श्बॉसरू बॉर्न टू रूलच्य, श्द रॉयल बंगाल टाइगरच्य, श्बच्चनच्य और श्बादशा– द डॉन्च्य जैसी कई हिट फिल्मों में काम कर चुके बंगाली सुपरस्टार जीत श्चेंगिजच्य में बिल्कुल नए अवतार में नजर आएंगे। इस फिल्म में रोहित बोस रॉय और सुष्मिता चटर्जी की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

# ज्यादा पपीते का सेवन भी हो सकता है आपके लिए हानिकारक, जानिए कैसे

विशेषज्ञ स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक आहार को अपनी डाइट में शामिल करने के लिए भी बोलते है। सही मात्रा में सही खानपान सेहत को दुरुस्त रखता है, साथ ही कई बीमारियों से बचाव और इलाज में भी लाभदायक होता है। पौष्टिक आहार के बारें में बात आती है, तो सबसे पहली सब्जियों और फलों का जिक्र भी देखने के लिए मिलता है। स्वस्थ रहने के लिए हमेशा हरी सब्जियों और फलों के सेवन के लिए बोला जाता है। वहीं किसी रोग विशेष में भी डॉक्टर किसी खास सब्जी या फल के सेवन को डाइट में शामिल करने का हमेशा ही बोलते है। इन पौष्टिक आहारों में पपीते का नाम भी जोड़ा जा चुका है। विशेषज्ञों का इस बारें में कहना है कि, पपीता सेहत के लिए बहुत लाभदायक होता है। पपीता का सेवन करने से कई तरह के रोगों से छुटकारा मिलता है। हालांकि पपीता कई बार हानिकारक भी हो सकता है। यदि आप भी पपीते का रोजाना सेवन करते हैं तो जान लीजिए कि पपीता आपके लिए कितना फायदेमंद और हानिकारक हो सकता है।

पपीता में पाए जाने वाले पोषक तत्व

पपीता को विटामिन ए का खजाना कहा जाता है। पपीते में अत्यधिक मात्रा में विटामिन ए होता है, इसके साथ साथ विटामिन सी भी पाया जाता है। वहीं पपीते में अधिकांश मात्रा में पानी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट पदार्थ, क्षार तत्व, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, शर्करा आदि पाया जाता है। प्राकृतिक तौर पर जिसमे फाइबर, कैरोटिन और मिनरल्स पाए भरपूर मात्रा में भी मिलते है।

पपीता खाने के फायदेः– पपीते का सेवन हृदय रोगों से बचाव करता है

पपीते के बीज का उपयोग करते पाचन प्रक्रिया को बेहतर कर सकते हैं।

पपीता में पाए जाने वाले औषधीय गुण आंखों की सुरक्षा के लिए लाभकारी हैं।

गठिया के मरीजों को पपीते का सेवन करना चाहिए, उसके लिए पपीता उपयोगी है।

त्वचा की रंगत में सुधार के लिए पपीता लाभकारी है।

पपीता के सेवन के नुकसानरू

गर्भावस्था में पपीते का सेवन नहीं करने के लिए मना किया जाता है। पपीते में लेटेक्स पाया जाता है तो गर्भाशय के संकुचन का कारण बन सकता है। जिससे गर्भपात, प्रसव दर्द, शिशु में असामान्यताएं भी देखने के लिए मिल सकती है।

स्तनपान कराने वाली माताओं को पपीते के सेवन से बचने के लिए बोलते है।

उच्च मात्रा में पपीते का सेवन पीलिया की समस्या को बढ़ावा भी देते है।

पपीते का अधिक सेवन नाक में कंजेशन, झनझनाहट, दमा जैसी सांस संबंधी परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है।

गुर्दे की पथरी की समस्या भी अधिक पपीते के सेवन की वजह से हो सकती है।

एक साल से कम उम्र के बच्चों के लिए पपीते का सेवन हानिकारक हो सकता है।